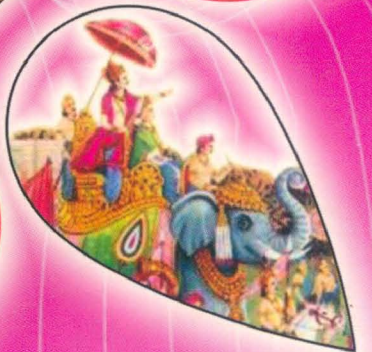
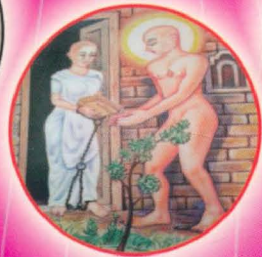
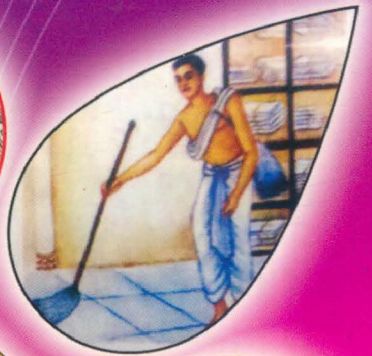
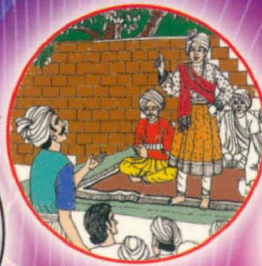
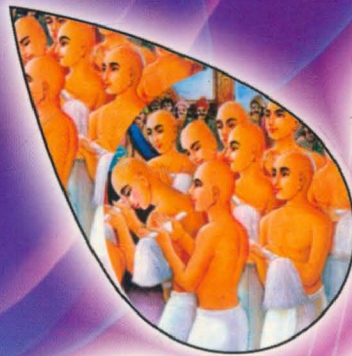




Jainism With Art

कला द्वारा संस्कार सिंचन

बच्चों को विनयवान एवं
गुणवान बनाने के लिए



...प्रेरणा...

प.पू. आचार्य श्री नयचंद्रसागरसूरीश्वरजी म.सा.



प्यारे बच्चो !

साधु-साध्वी भगवंत के उपकरण के आगे "S" करे
और पापकारी साधनों के सामने "R" करे !

Dear Children !
Identify Sadhu's Object & Write " S "
& "R" for Sin full (Papkari) object.



KAMLI



COSMETICS



NAVKARVALI



LAMP



PUNJANI & SUPDI



MOBILE



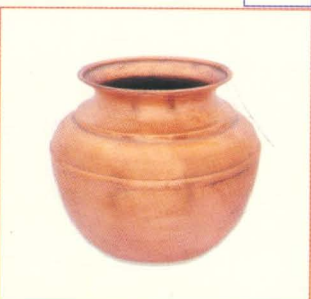
DINNING TABLE



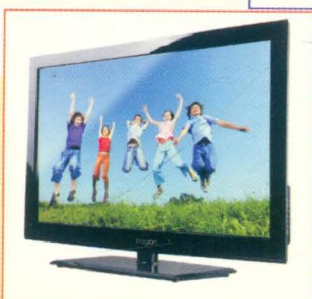
TARAPNI & CHETNO



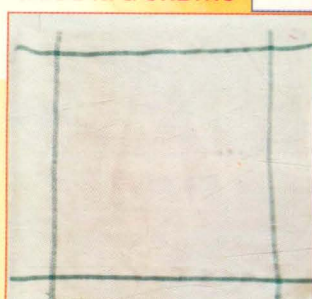
CAR



GHADA



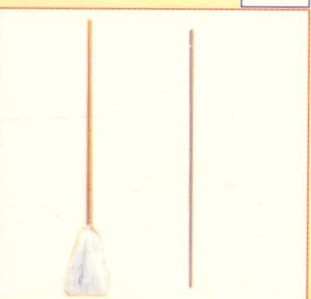
T.V.



AASAN



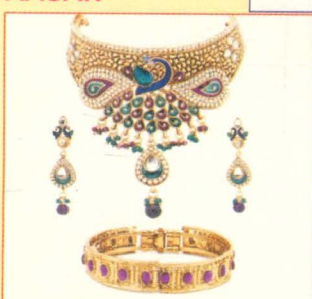
BED



DANDASAN & DANDO



SCHOOLBAG



JEWELLERY



STHAPNACHAARYA



KID'S WEAR



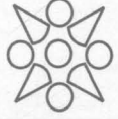
SCOOTER



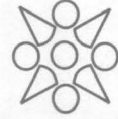
OGHO & MUHPATI

बच्चो को विनयवान एवं गुणवान बनाने के लिए

Jainism with Art-5



कला द्वारा संस्कार सिंचन



ॐ

जैन बच्चो के संस्कार का उपपत्ति...
पाठशाळा ही है। जिसमें शास्त्रों में चल रही
काफी पाठशाळाओं की स्थिति अतिशय
जमीर है। स्कूल के माहौल में डूबे हुए
बच्चे पाठशाळा और धर्म से दूर हो रहे
हैं। बच्चों में हो रहे संस्कार के गुणवत्ता को
शिक्षकों के लिए प्रस्तुत पुस्तिका के माध्यम से
राष्ट्रियक पद्धति से प्रयत्न हो रहा है।

कला-संस्कार और सद्गुणों का निर्माण
करने का शुभाशय के साथ यह लक्ष्य पुस्तिका
-श्रेणी श्री जैन संघ के माध्यम से प्रस्तुत हो...
रही है। यह प्रयत्न अत्यंत अग्रेसर है।

प्रत्येक जैन के घर में कला-कलाओं का
यह पुस्तिका द्वारा शास्त्र-कला-संस्कार-
सद्गुण प्राप्त करें। भविष्य में शासन की
स्वा-आस्थाओं में आगे बढ़े ऐसे मंगल
आशाओं के साथ-----

गजराज शर्मा

...प्रेरणा...

वर्धमान तपोनिधि

पू.आ.श्री नयचंद्रसागरसूरिजी म.सा.

...मार्गदर्शक...

मुनि श्री ऋषभचंद्रसागरजी म.सा.

मुनि श्री शीतलचंद्रसागरजी म.सा.

...संयोजक...

मुनि श्री सुमतिचंद्रसागरजी म.सा.

...प्रकाशन...

पूर्णानंद प्रकाशन

...संचालक...

गीरीशभाई दोशी / जीज्ञेशभाई शाह
Mo. 79779 44600 / 73833 90712

...अनुमोदना...

संस्कारवाटिका, चेन्नाई

गुडबोय-पं.श्री वेराग्यरत्नविजयजी म.सा.

लर्न एन्ड टर्न-पू.पं.श्री मनोभूषणविजयजी म.सा.

संस्कारधन-पू.भद्रगुप्तविजयजी म.सा.

अनुवाद सहायक-पू.सा.श्री अनंतनिधिजीजी म.सा.

महाराष्ट्र

बोरिवली-कांदिवली-मीरारोड आदि	
भावनाबेन	98193 17766
मुलुंड-भांडुप-विक्रोली आदि	
अमितभाई गांधी	98672 12848
विवेकभाई	98199 71556
घाटकोपर - रुपेशभाई	93222 31001
वालकेश्वर-भाविकभाई	98211 66679
माहुंगा-तुषारभाई	98202 35992
गोरेगाम - पीकीबेन	99695 45565
चोपाटी - मुकेशभाई	93222 78552
मलाड-अनिलभाई	88501 21255
भायंदर-सचीनभाई	99875 41944
भायखला-रसीलाबेन	93211 04850
नवजीवन-नितिनभाई	98331 22175
कल्याण-मोहनभाई	98204 75515
भिवंडी-अतुलभाई	9890769493
डोम्बीवली-धनेशभाई	93225 66437
नासिक-राकेशभाई	97300 11110
नंदुरबार-आकाश जैन	87805 15309

गुजरात

अमदावाद-परेशभाई	93749 52660
आणंद-नीतीनभाई	98250 30825
बरोडा-कृतार्थभाई	93749 93060
बरोडा-आकाशभाई	94274 60140
बरोडा-सपनभाई	99243 65161
नवसारी-वलसाड-बारडोली आदि	
जनकभाई सर	95372 71201
हिंमतनगर-हार्दिकभाई	9898689591
महेसाणा-भाविनभाई	98792 18081
उंझा-हेमाबेन	98250 67204
जामनगर-निशीथभाई	94299 41554
सुरत	
निकेशभाई	96629 84685
मार्गेशभाई	90999 25330
हिरलभाई	99794 22629
कतारगाम- पारस शाह	81281 45044
अडाजण-पाल	
भावेशभाई	96622 98800
डभोई-सौरीनभाई	97250 04267

पूना

श्रीपालभाई	96652 32226
दिनेशभाई	98226 27476
विकेशभाई	98234 45704
अशोकभाई	98900 49333
अमितभाई	98229 64843
मयुरभाई	94219 02989
महावीरभाई	72768 89363

मध्यप्रदेश रतलाम-इंदौर-उज्जैन आदि

श्री नवकार परिवार	
अमित मुण्ठ	98272 75740
राजगढ शुभम्	97556 85883

प्रतापगढ (राज.)

नुपुलभाई जैन	94130 47032
--------------	-------------

बेंगलोर-चेन्नाई एवं समग्र दक्षिण भारत

लवीशभाई	97234 00447
---------	-------------

यदि आप भी बालसाहित्य भेजना चाहते हो तो
पूर्णानंद प्रकाशन के पते पर भेजे। आप के नाम से
मेगैज़ीन में उचित जगह पर प्रकाशित किया जायेगा।



ज्ञान के दोहे / Gyan ke Dohe

प्यारे बच्चो !

क्या आपको याद कम रहता है ? क्या आपका मन एकाग्र नहीं रहता है ? क्या आपको पढ़ा हुआ ज्यादा समय तक याद नहीं रहता है ? इन सभी समस्याओं के हल के लिए ज्ञान के दोहे बोलकर एक-एक खमासमणा देकर बाद में पढ़ने बैठो और फिर चमत्कार देखो।

Dear Kids !

Do you find difficulty in remembering ? Are you not able to concentrate on a particular thing ? To overcome these problems, keep the books in front of you and recite Gyan ke Dohe. recite one doha, followed by one Khamasmana. After this, start your study and then see the miracle.

◎ समकित श्रद्धावंत ने, उपन्यो ज्ञान प्रकाश
प्रणमु पदकज तेहना, भाव धरी उल्लास
श्री मतिज्ञानाय नमो नमः
इच्छामि खमासमणो...

◎ Samkit shraddhavant ne, upnyo gyan prakash
pranamu padkaj tehna bhav dhari ullas
Shri Mati gyanay namo namah
Ichhami khamasmano..

◎ पवयण श्रुत सिद्धांत ते, आगम समय वखाण
पूजो बहुविध रागथी, चरण कमल चित्त आण
श्री श्रुतज्ञानाय नमो नमः
इच्छामि खमासमणो...

◎ Pavyan shrut siddhant te, aagam samay
vakhan
pujo bahuvidh rag thi, charan kamal chitt aan
Shri Shrut gyanay namo namah
Ichhami khamasmano...

◎ उपन्यो अवधि ज्ञान नो, गुण जेहने अविकार
वंदना तेहने माहरी, श्वासमांहे सो वार
श्री अवधिज्ञानाय नमो नमः
इच्छामि खमासमणो...

◎ Upnyo avadhi gyan no, gun jehne avikar,
vandana tehne mahri, shwas mahe so vaar
Shri Avadhi gyanay namo namah.
Ichhami khamasmano...

◎ ए गुण जेहने उपन्यो, सर्व विरति गुणठाण
प्रणमु हितथी तेहना, चरण कमल चित्त आण
श्री मनःपर्यवज्ञानाय नमो नमः
इच्छामि खमासमणो...

◎ A gun jehne upnyo, sarva virati gun-than
pranamu hitathi tehna, charan kamal chitt aan
Shri Manha paryav gyanay namo namah
Ichhami khamasmano...

◎ केवल दंसण नाण थी, चिदानंद घन तेज
ज्ञान पंचमी दिन पूजिए, विजय लक्ष्मी शुभ हेज
श्री केवलज्ञानाय नमो नमः
इच्छामि खमासमणो...

◎ Keval dansan naan thi, chidanand ghan tej
Gyan Panchami din pujiyae vijay lakshmi
shubh hej
Shri keval gyanay namo namah.
Ichhami khamasmano.



जाप मंत्र



ॐ ह्रीं नमो नाणस्स
ॐ ऐं नमः



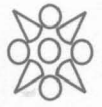
Jap Mantra



Om Hrim Namo nanassa
Om aim namah.



हमें क्या करना चाहिये ? / What We Should do?



किसी भी जीव को मारना नहीं।

कभी भी झूठ नहीं बोलना।

कभी भी चोरी नहीं करना।

दुःखी जीवों पर दया करना।

परोपकार करो, पुण्य के भंडार भरो।

अपशब्द (गाली गलौच) नहीं बोलना।

अभक्ष्य वस्तु नहीं खाना।

अपेय पदार्थ नहीं पीना।

भूखे को अन्न दो,

प्यासे को पानी, दो

निर्वस्त्र को वस्त्र दो।



किसी भी जीव को मारना नहीं।

कभी भी झूठ बोलना नहीं।



कभी भी चोरी करना नहीं।



भूखे को अन्न दो
प्यासे को पानी,
निर्वस्त्र को वस्त्र दो।



We should **not** kill any living being.

We should **never** lie.

We should **never** steal any thing.

Have mercy on unhappy living being.

Do charity, **fill** life with virtues (punya).

Never abuse anybody.

Do not eat non-eatables (stale food, ice, roots, pickle etc.)

Never drink alcohol/soft drinks.

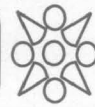
Give food to starving person,

Water to thirsty person,

Clothes to needy person.



माता-पिता भक्त - श्रवण कुमार



एक गाँव में एक गरीब ब्राह्मण परिवार रहता था। परिवार में 3 सदस्य थे - माता, पिता और उनका एक पुत्र श्रवण। माता-पिता अंधे व बुढ़े थे। उनके जीवन का एकमात्र सहारा श्रवण ही था। श्रवण विनय-विवेक युक्त था और माता-पिता का भक्त था। उनकी सेवा में कभी आलस्य नहीं करता था।

एकबार माता-पिता को उदास देखकर श्रवण ने पूछा - आप इतने उदास क्यों दिखाई दे रहे हैं ?, आप मुझे बताइये, आपको क्या तकलीफ है ?

माता-पिता बोले - बेटा ! आज तक तुमने हमारी सभी इच्छाओं को पूरा किया है, किन्तु कितने समय से 68 तीर्थों की यात्रा की तमन्ना जागी है। पैसे न होने से यह इच्छा पूरी नहीं होगी, यह सोचकर हम निराश हैं।

माता-पिता की बात सुनकर श्रवण बेचैन हो गया। **माता-पिता की एक भी इच्छा अधूरी रहे यह श्रवण को मंजूर नहीं था।** पैसे के अभाव में यात्रा कैसे हो सकती है यह सोचते-सोचते आखिर श्रवण को उपाय मिल गया। भूखे को भोजन और प्यासे को पानी मिलने जितना आनंद श्रवण को हुआ।

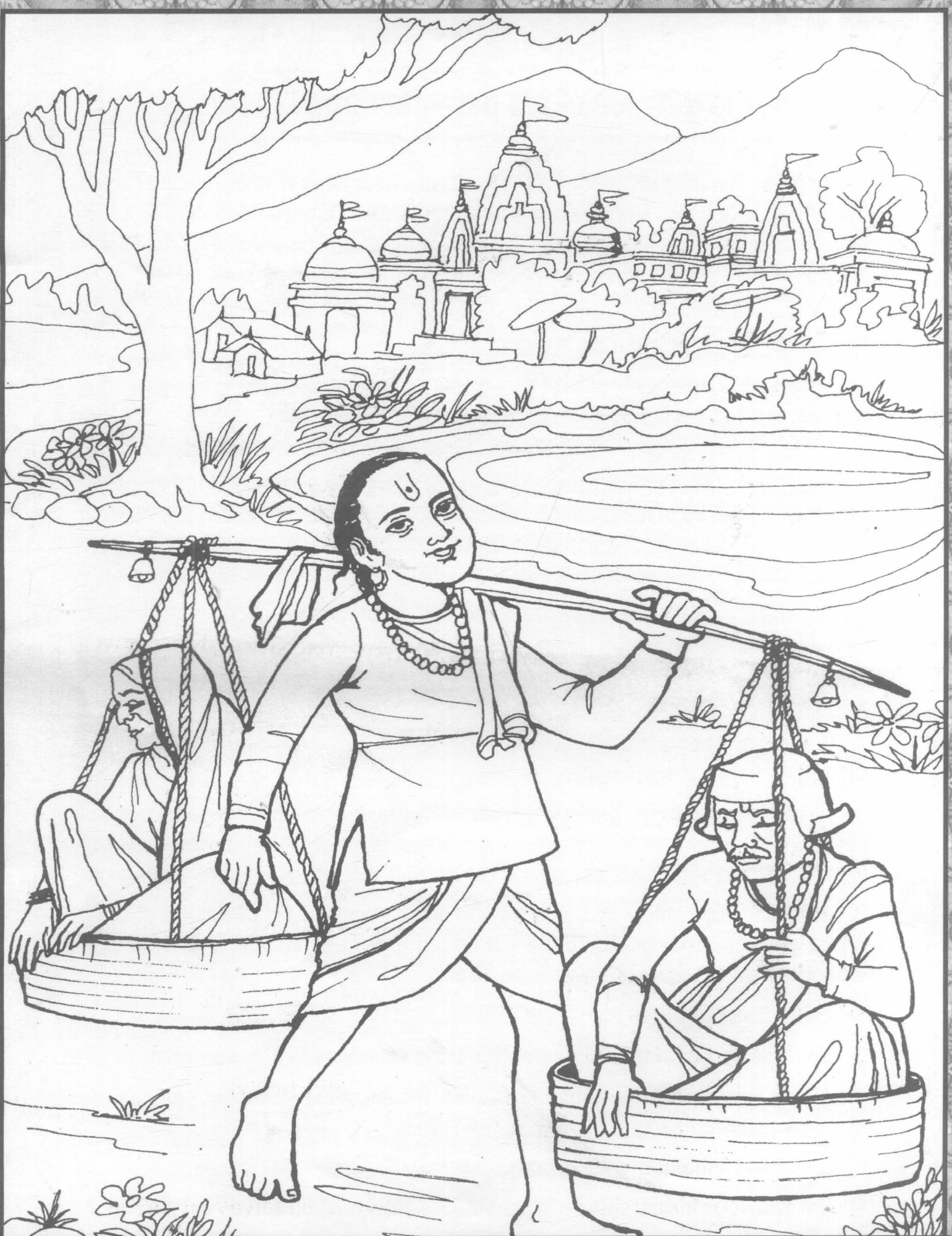
श्रवण ने दो टोकरे और एक डंडे से कावड़ बनाई। एक तरफ माता को और एक तरफ पिता को बिठाकर, कावड़ कंधों पर रखकर और भगवान का नाम लेते हुए श्रवण चलने लगा। उसे न तो वजन लगता है और न शर्म आती है। थकान का तो नामोनिशान ही नहीं था। चेहरे पर खुशी और माता-पिता को यात्रा करवाने का उत्साह देख सभी लोग आश्चर्य मुग्ध हो जाते हैं।

68 तीर्थों की यात्रा का मौका मिलने से माता-पिता का मन मयूर भी नाचने लगा। पुत्र के प्रति प्रेम का झरना उमड़ पड़ा। हृदय से ढेरों आशीष निकल पड़े। सोचने लगे, बेटा हो तो ऐसा हो।

श्रवण भी 68 तीर्थों की यात्रा करवाने की भावना से आगे बढ़ता है। तीर्थ आने पर माता-पिता को भाव से दर्शन करवाता है। हजारों लोगों का सिर श्रवण के आगे आदर से झुक जाता है।

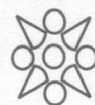
⇒ बोध : प्यारे बच्चो.....

- ◎ श्रवण के समान माता-पिता का सहारा बनना।
- ◎ माता-पिता की एक भी इच्छा बाकी रहने पर जो दुःखी हो वही सच्चा पुत्र है।
- ◎ माता-पिता की सेवा में शर्म नहीं करना।
- ◎ श्रवण माता-पिता को अपने कंधों पर बिठाकर यात्रा करवाता है, आप अपने मम्मी-पापा की सेवा कैसे करेंगे ?





A true devotee of his parents - Shravan Kumar



A poor Brahmin family lived in a village. There were three members in the family- mother, father and their son Shravan. His parents were blind and old. Their only support in life was Shravan. Shravan was the true devotee of his parents and had both - modesty as well as wisdom. He was never ignorant in serving his parents.

Once on finding his parents sad, Shravan asked, "Why are you looking so sad ? Please tell me what problem you are facing ?"

They said, "Till date you fulfilled all our desires, but for a long time we have a desire to go for pilgrimage of the 68 tirthas. However, due to lack of money, it seems impossible to have this desire fulfilled. This is the cause of our sadness.

On listening this, Shravan became restless. **It wasn't acceptable to him, that even the smallest desire of his parents remains unfulfilled..** He started thinking that how he can take the parents for pilgrimage without money, and he got a solution ! He got the same pleasure as a hungry man would get on getting food or a thirsty on getting water.

Shravan took two crates and one stick to form a 'kaavad'. He made his father sit on one side and mother on the other. Holding the 'kaavad' on his shoulders, Shravan started walking and chanting God's name. Neither he was feeling the weight nor he was ashamed of it.

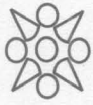
Everybody was surprised to see the happiness on his face and the enthusiasm for fulfilling the desire of his parents .

His parents' heart got filled with joy on getting the opportunity of the pilgrimage of the 68 tirthas. They showered love and lots of blessings on him. They wished that every one should have a son like Shravan.

Shravan paced ahead from one tirtha to another and got the pilgrimage of all 68 tirthas completed. Thousands of people bowed their head in front of Shravan and saluted his spirit of devotion towards his parents.

⇒ **Moral : Dear Children !**

- ◎ **Become a support to yours parents just the same way as Shravan.**
- ◎ **A true son would be unhappy if even the smallest desire of his parents remains unfulfilled.**
- ◎ **Never feel ashamed to serve your parents.**
- ◎ **Shravan took his parents on his shoulders. How will you serve your parents ?**



अहंकार भगाया – केवलज्ञान पाया



भरत और बाहुबली सहित आदिनाथ भगवान के 100 पुत्र हैं। भरत को चक्ररत्न प्राप्त हुआ। उन्होंने सभी देश जीत लिए, पर अब यदि 99 भाई आज्ञा स्वीकारें तो ही वे चक्रवर्ती बन सकते हैं। भरत ने उन सभी को अधीनस्थ होने का आदेश भिजवाया। पर इस आज्ञा को स्वीकार न करके 98 भाइयों ने भगवान के पास दीक्षा ले ली। एक बाहुबली बड़े भाई की सेवा के लिए तैयार हैं पर राजा के रूप में आज्ञा मानने को तैयार नहीं हैं। अतः दोनों के बीच युद्ध तय होता है। तब इन्द्र महाराज आकर दोनों भाइयों को समझाते हैं कि, आप भगवान के पुत्र हैं। आपको यह जनसंहार शोभा नहीं देता। तथापि आपको युद्ध ही करना है तो आप आपस में वाक् युद्ध, बाहु युद्ध, मुष्टि युद्ध, दंड युद्ध कर लीजिए, जिससे अनेक निर्दोष लोगों की जान बच जाए। दोनों ने इन्द्र की सलाह स्वीकार कर ली।

युद्ध में हर समय बाहुबली की जीत हुई। इससे भरत क्रोधित हो गया और उसने युद्ध का नियम तोड़कर अपना चक्ररत्न बाहुबली पर छोड़ा। परन्तु आश्चर्य कि चक्ररत्न बाहुबली को तीन प्रदक्षिणा देकर वापिस आ गया। ऐसा इसलिए हुआ कि एक कुल या गोत्र वाले जीवों को चक्र नुकसान नहीं पहुँचाता।

भरत के नियम तोड़ने से बाहुबली का क्रोध अमर्यादित हो गया। भरत ! तुझे और तेरे चक्र को एक मुट्ठी में चूर चूर कर दूँगा, यह बोलते हुए वे भरत को मारने दौड़े।

पर अचानक उनकी विचारधारा बदली... पिता समान बड़े भाई को मारना उचित नहीं है... राज्य और संपत्ति तो विनाशकारी है। किंतु, उठाया हुआ हाथ वापिस नहीं लिया जाता यह सोचकर उसी हाथ से अपना लोच कर लिया एवं युद्ध भूमि में ही दीक्षा लेकर काउस्सग ध्यान में स्थिर हो गए। केवलज्ञान होने के बाद भगवान के पास जाऊँगा, ऐसा विचार करते हुए ध्यान में मग्न हो गए।

एकाग्रता से ध्यान करते हुए बाहुबली को १२ महीने हो गये। स्तंभ जैसे शरीर पर लताएं फैल गईं, पक्षियों ने घोंसले बना लिए। परन्तु बाहुबली मुनि स्थिर रहे। तप-त्याग- ध्यान से अनेक कर्म नाश हो गए, परन्तु अभिमान दूर न हुआ ! जिस कारण केवलज्ञान की चाहत है वही कारण केवलज्ञान में रुकावट बना है!

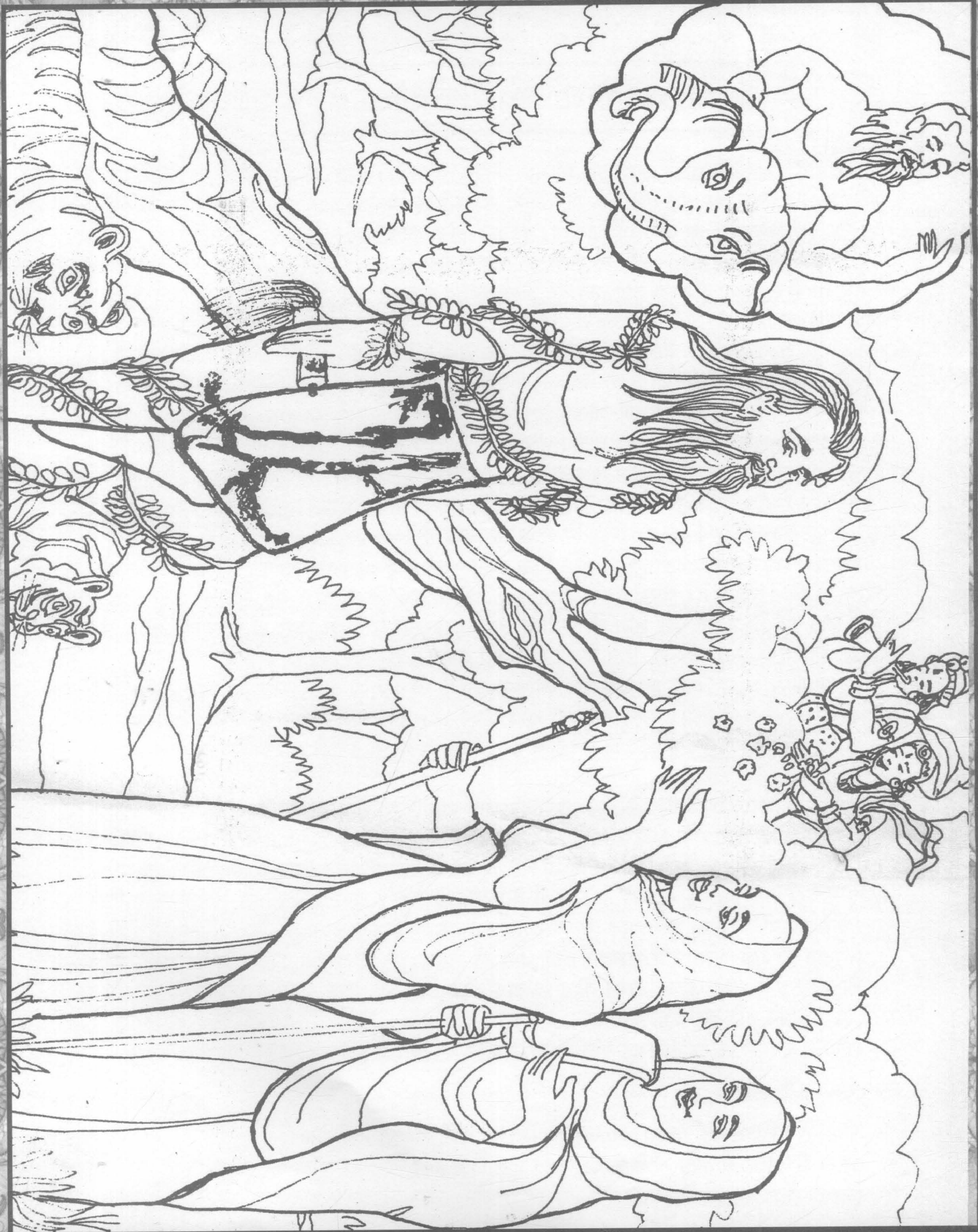
एक दिन भगवान के आदेश से बाहुबलीजी की बहनें दोनों बहने साध्वीजी ब्राह्मी एवं सुंदरी वहां आकर कहने लगी - वीरा मोरा गज थकी उतरो, गज चढ़े केवल न होय। हे भाई! आप हाथी से नीचे उतरो, हाथी पर चढ़े हुए को केवलज्ञान नहीं होता। बहनें तो यह कहकर वापिस लौट गईं किन्तु बाहुबलीजी विचार मग्न हो गए - यहाँ कोई हाथी है ही नहीं फिर बहनों ने ऐसा क्यों कहा ? गहराई से सोचते-सोचते रहस्य मिल गया। छोटे भाइयों को वंदन नहीं करने का जो अहंकार है वह अहंकार ही हाथी है।

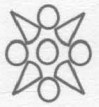
भगवान ने मुझे सत्य बात समझाई। वो भाई तो मुझसे बड़े हैं क्योंकि उन्होंने मुझसे पहले दीक्षा स्वीकार की है। मैं अभी जाकर उनको वंदन करता हूँ, इस विचार के साथ वंदन के भाव से पहला कदम उठाते ही बाहुबली मुनि को केवलज्ञान प्रगट हो गया।

भगवान के पास जाकर तीन प्रदक्षिणा देकर वे केवली पर्षदा में विराजित हो गए।

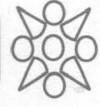
⇒ बोध : प्यारे बच्चों.....

- ◎ जीवन में अहंकार नहीं करना। अहंकारी व्यक्ति का कभी विकास नहीं होता।
- ◎ नम्रता से जीवन में आगे बढ़ने के कई रास्ते खुल जाते हैं।
- ◎ तुच्छ चीजों के लिए कभी झगड़ा नहीं करना।





Defeated Ego, obtained Keval Gyan



God Adinath has hundred (100) sons, including Bharat and Bahubali. Bharat got the Chakraratna (a kind of weapon). He won all the countries, and now if his 99 brothers accept him as king, he can become Chakravarti. He sent a message to all of them to surrender and come under his kingdom and be ruled by him. 98 brothers did not accept this and took 'Diksha' from Lord Aadinath. Bahubali got ready to serve Bharat as elder brother, but wasn't ready to serve him as a king. Hence a war was announced between the two brothers. Then Indra came and told both of them that, you are the sons of Bhagwan Aadinath. This mass killing doesn't suit you. But if you still wish for a war, you can go in for a debate or kushti, boxing, so that the lives of many innocent people is saved. Both of them accepted Indra's proposal.

Bahubali won in all the wars. This made Bharat angry and he violeted a rule and threw his Chakraratna at Bahubali. But astonishingly, the chakraratna circled Bahubali three times and went back. This is because the Chakra doesn't harm people of the same religion or caste.

Seeing that Bharat had violeted a rule, Bahubali's anger shooted up like anything and he rushed towards Bharat, shouting "Bharat ! I will crush you and your chakra". But suddenly, his thoughts changed... It isn't right to kill my elder brother... **Kingdom and wealth are not permanent things.** However thinking that a hand raised up cannot be put back, he plucked all his hair with the same hand, and took 'diksha' on the war ground itself. Thinking that after obtaining Kevalgyan, he would go to Lord Aadinath directly, he started meditating. King Bharat returned back to his place.

Bahubali had now spent 12 months in meditation. Creepers had started growing on his pillar like stable body; birds had started making their nests on him. But he remained stable. His meditation had destroyed all his sins but his ego didn't leave him.

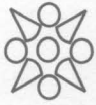
The reason for which he wanted Kevalgyan was becoming the obstacle in obtaining Kevalgyan.

After some time, as per the order of Lord Aadinath, his sisters Brahmi and Sundari came to him and said - Oh brother ! **Get down from the elephant. You will not get Kevalgyan while you sit on the elephant.** After telling this they went back but Bahubali started thinking... There is no elephant here, then what were the sisters talking about ? Thinking deeply he realised that he was sitting on the elephant of ego : the ego of not meeting his brothers. Lord Aadinath had explained the right thing to him - "They are elder to me because they took Diksha before me. I will go right now to meet them." Thinking this, as soon as he took the first step to go to his brothers he obtained Kevalgyan.

Then he went to Lord Aadinath, circled him three times and settled in Kevali Parshada.

⇒ **Moral : Dear Children !**

- ◎ **Never keep ego. It doesn't let you grow.**
- ◎ **Politeness opens all doors to a peaceful life.**
- ◎ **Never fight for useless things.**



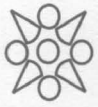
Learn Elements to become Jain



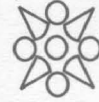
1. **Who wrote 'Ratnakar Pacchisee' ?**
 a. Muni Chandra Suri Maharaja
 b. Hemchandra Suri Maharaja
 c. Ratnakar Suri Maharaja
 d. Yashovijayji Maharaja
2. **Which paad has 67 attributes (Gunas) ?**
 a. Darshan
 b. Gyan
 c. Charitra
 d. Taap
3. **Which of these karmas does not let charitra happen ?**
 a. Samkit mohaniya
 b. Darshan mohaniya
 c. Mithyatva mohaniya
 d. Charitra mohaniya
4. **How many Devata arrive for requesting the Tirthankar Bhagwan to accept charitra ?**
 a. 5
 b. 64
 c. 9
 d. 108
5. **Whose Samayik was praised by Lord Mahavir ?**
 a. Puniya Shravak
 b. Anand Shravak
 c. Ambad Shravak
 d. Kamdev Shravak
6. **Who used to make 108 Swastiks in the direction in which Lord Mahavir used to move?**
 a. Shrenik Maharaja
 b. Konik Maharaja
 c. Krishna Maharaja
 d. Nandivardhan Maharaja
7. **What is the name of Lord Ajitanath's mother ?**
 a. Trishala Mata
 b. Vijaya Mata
 c. Vama Mata
 d. Marudevi Mata
8. **What is the length of Siddha Shila ? (in lakh yojan)**
 a. 40 Lakh
 b. 45 Lakh
 c. 50 Lakh
 d. 55 Lakh
9. **Who gives devdusya at the time of Tirthankar's Diksha up ?**
 a. King
 b. Mother
 c. People
 d. Indra
10. **How many Gurupaad are there in Navpaad ?**
 a. Two
 b. Three
 c. Four
 d. Five
11. **Who ate bitter Tumbdi to save ants ?**
 a. Muni Dharmaruchi
 b. Muni Ilachi
 c. Muni Gajsukumal
 d. Muni Sthulibhadra
12. **After how many years of Diksha did Lord Mahavir Swami got Kevalgyan ?**
 a. 5 1/2
 b. 10 1/2
 c. 12 1/2
 d. 18 1/2

1) C	2) A	3) D	4) C	5) A	6) A
7) B	8) B	9) D	10) B	11) A	12) C

Learn elements to become Jain - Answers



चतुर अभयकुमार - चोर



मगधदेश के महाराजा श्रेणिक की चेलणा नामक रानी थी। चेलणा को एक एकस्तंभी महल में रहने की इच्छा हुई। बुद्धिमान वास्तुकारों ने देवअधिष्ठित सुन्दर एक स्तंभ वाला महल निर्मित कर उसके आसपास विशाल बगीचा बनवाया। बगीचा देव अधिष्ठित होने से उसमें 6 ऋतु के फल व फूल आते थे।

इसी नगरी में एक चांडाल रहता था। एक बार उसकी पत्नी को आम खाने की इच्छा जागी। पर मौसम बिना आम कहाँ से लाना ? इच्छापूर्ति न होने से पत्नी दुर्बल होने लगी। इससे चांडाल परेशान हो गया। उसे पता चला कि राजा के बगीचे में 12 महीने आम आते हैं, परन्तु सैनिकों की सख्त चौकी है वहाँ। उसके पास एक विद्या थी। वह बगीचे के पीछे के भाग में गया। वहाँ आम का पेड़ ऊँचा था। उसने मंत्र स्मरण किया, डाली झुक गई। पत्नी की इच्छा पूर्ण हो गई। अब तो काम सरल था। रोज होने लगा। माली ने राजा को खबर दी। राजा ने दरवाजे पर सख्त पहरा बढ़ा दिया, परन्तु चोर हाथ में नहीं आया।

आखिरकार राजा ने अभयकुमार को चोर पकड़ने का काम सौंपा। बुद्धिशाली अभयकुमार ने वेश परिवर्तन किया तथा निम्न कार्य करने वाले लोगों की बस्ती में जाकर इधर-उधर की बातें शुरु की। बातों ही बातों में अभयकुमार ने एक कहानी शुरु की-

“17-18 साल की एक कन्या 16 श्रृंगार सज कर यक्ष की पूजा करने अकेली जा रही थी। रास्ते में एक मनुष्य मिला। उसने कन्या के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा। कन्या ने कहा, यक्ष की पूजा करके वापिस लौटते समय आप जैसा कहोगे वैसा करूंगी, अभी मुझे जाने दो। यह वादा करके आगे निकली। थोड़ा आगे बढ़ने पर चोर मिले। किमती आभूषणों को दे देने की बात कही। कन्या ने फिर वादा किया और आगे बढ़ी। रास्ते में उसे राक्षस मिला। खाने की इच्छा जाहिर की। निडर कन्या ने फिर वही बात दोहरा दी। इस प्रकार चलते-चलते मंदिर पहुँची। वहाँ यक्ष की पूजा-भक्ति करने के बाद वापिस उसी रास्ते से आने लगी। रास्ते में पहले राक्षस और फिर चोर मिले। दोनों से कन्या ने कहा, यक्ष की पूजा हो गई है। अब आप जो चाहें कर सकते हैं। कन्या की हिम्मत देखकर दोनों ने उपहार देकर कन्या को जाने दिया। आगे बढ़ने पर वही युवक मिला। उसे भी वैसा ही कहा। कन्या की निर्दोषिता देखकर वह तो दंग रह गया। उसने भी कन्या को जाने दिया। इस प्रकार वह सुरक्षित अपने घर पहुँच गयी।”

यह कहानी पूर्ण होने पर अभयकुमार ने पूछा, इन तीनों में मूर्ख कौन है ? जो विषय भोगों के रसिक थे उन्होंने युवक को मूर्ख कहा। जो खाने के लालची थे उन्होंने राक्षस को मूर्ख बताया तथा चांडाल जो कि चोर था उसने चोरों को मूर्ख कहा। और जो सज्जन थे उन्होंने तीनों को धन्यवाद दिया।

इस प्रकार अभयकुमार ने अपनी बुद्धिमानी से चोर को पकड़कर श्रेणिक महाराजा को सौंप दिया। जो कार्य कोई न कर सका वह अभयकुमार ने आसानी से कर दिया।

(क्रमशः)

⇒ बोध : प्यारे बच्चे,

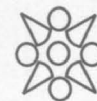
◎ बुरी आदतों से हमेशा दूर रहना चाहिए।

◎ मन में जैसे विचार होते हैं वैसे ही मुँह से निकलते हैं। विचार अच्छे होंगे तो ही वाणी अच्छी निकलेगी।





Intelligent Abhay kumar



The king of Magadh, Shrenik, had a queen named Chelna. Once, Chelna desired to live in a single pillared palace. Intelligent architects made a beautiful one-pillared palace according to her wish and made a huge, stunning, heavenly blessed garden around it. The garden being heavenly blessed had fruits and flowers of 6 seasons.

There lived a chandal in city. Chandan's (lower cast person's) wife wished to eat mango. But were to find mango without season ? Because of her wish not going fulfilled, she became very lean. This made the man worried. Somehow he came to know that in the king's garden, there were mangoes available all the time. But there was tight security. He knew a mantra. He went to the back side of the garden. There the mango trees were quite high. He chanted the mantra and the branches bent down. He pick up the mango. The branch instantly went back to its place. His wife's wish was fulfilled. Now the work became easy. This was done every day. The gardener informed the king. He increased the security at the gates but could not catch the thief.

Finally he handed over the task of catching the thief to Abhaykumar. Abhaykumar changed his dress and went to the lower caste people's area and started talking to them. While talking, he started narrating a story-

"Once, a 16 years old, beautiful girl was going to worship a demigod (Yaksha), all alone. On the way she met a man. He proposed to marry her. She said, I would do as you say after I return from the prayer, right now please let me go. She promised and continued on her way. After some time she met some thieves. They wanted to loot all her jewellery. She again promised to come back and moved ahead. Then she met a demon. He wanted to eat her up. She told the same thing and this way, that fearless girl finally reached the temple. After worshipping the Yaksha, she started returning on the same track. On the way she met the demon first and then the thieves. She said the same thing to each of them - now that I have returned, you can do whatever you wish to do. Looking to the girl's bravery they gave her a gift and let her go. Then she met the man. She said the same thing to him also. Looking to her innocence he got surprised. He too let the girl go. This way the girl reached her home safely."

After finishing the story, Abhaykumar asked- who is the fool amongst them? Those who were fond of vishay-bhog (sensuality) said that the man was a fool. Those who were fond of eating, felt that the demon was a fool. And the man, who had stolen the mangoes from the garden, said that the thief was a fool. Whereas the gentlemen thanked all the three.

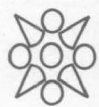
This way Abhaykumar used his intelligence and presence of mind to catch the thief and handed over him to the king. The work which no one else could do was done by Abhaykumar easily.

(Contd. ...)

⇒ **Moral : Dear Children,**

◎ **Always stay away from bad habits.**

◎ **Our words reflect our thoughts. If we think good, we speak good .**



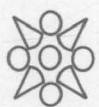
जिन मंदिर जाने से क्या लाभ



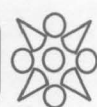
प्यारे बच्चों.....

मंदिर जाने की इच्छा करने मात्र से
मंदिर जाने के लिए खड़े होने मात्र से
मंदिर जाने के लिए पैर उठाने मात्र से
मंदिर की तरफ चलने पर
मंदिर के लिए आधे रास्ते पहुँचने पर
मंदिर दिखने पर
मंदिर पहुँचने पर
मंदिर के दरवाजे पर पहुँचने पर
प्रदक्षिणा देने पर
प्रभु की पूजा करने पर
स्तवन-स्तुति करने पर

- एक उपवास का फल मिलता है।
- दो उपवास का फल मिलता है।
- तीन उपवास का फल मिलता है।
- चार उपवास का फल मिलता है।
- पंद्रह उपवास का फल मिलता है।
- एक महीने के उपवास का फल मिलता है।
- छः महीने के उपवास का फल मिलता है।
- एक वर्ष के उपवास का फल मिलता है।
- सौ वर्ष के उपवास का फल मिलता है।
- हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है।
- अनंत उपवास का फल मिलता है।



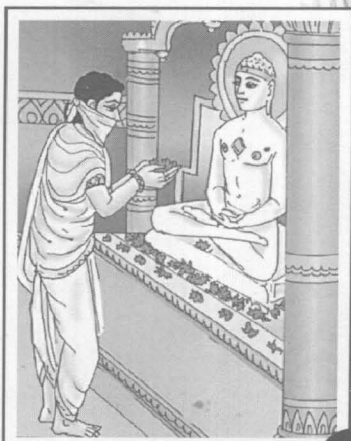
प्रभु पूजा से आठ कर्मों का नाश

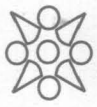


प्यारे बच्चों.....

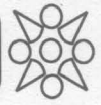
चैत्यवंदन करने से
प्रभु दर्शन करने से
जयणा का पालन करने से
प्रभु के गुणगान
(स्तवन-स्तुति वगैरह) करने से
रूपस्थ अवस्था भाने से
प्रभु के पास दासत्व स्वीकार करने से
विधिपूर्वक पूजा करने से
आत्मा का अविनाशी रूप विचारने से

- ज्ञानावरणीय कर्म का नाश होता है।
- दर्शनावरणीय कर्म का नाश होता है।
- वेदनीय कर्म का नाश होता है।
- मोहनीय कर्म का नाश होता है।
- नाम कर्म का नाश होता है।
- गोत्र कर्म का नाश होता है।
- अंतराय कर्म का नाश होता है।
- आयुष्य कर्म का नाश होता है।





Benefits of going to Jain Temple (Derasar / Jinalaya)



Dear Children...!

Just by the thought for going to the temple

- We get benefit of **one Upvas** (fast)

Just by getting up to go to Temple

- We get benefit of **two Upvas**

Just by taking a step towards the Temple

- We get benefit of **three Upvas**

By walking towards the Temple

- We get benefit of **four Upvas**

On having reached half way to the Temple

- We get benefit of **fifteen Upvas**

On seeing the Temple (DERASAR)

- We get benefit of **a month of Upvas**

On reaching the Temple

- We get benefit of **six months of Upvas**

On reaching the Temple's Door

- We get benefit of **one year of Upvas**

By circling (pradakshina)

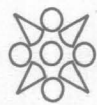
- We get benefit of **100 years of Upvas**

By doing God's Puja (Chandan puja etc.)

- We get benefit of **thousand Upvas**

By doing Stuti (Prayer)/Stavan

- We get benefit of **infinite Upvas**



Destruction of Eight Karmas by worshipping God



Dear Children...!

By performing Chaitya Vandan

- We destroy our **Gyanavarniya Karma**

By doing God's Darshan

- We destroy our **Darshanavarniya Karma**

By following Jayana
(mercy feeling towards living beings.)

- We destroy our **Vedaniya Karma**

By performing God's prayer (Stuti / Stavan)

- We destroy our **Mohaniya Karma**

By thinking of Roopastha state

- We destroy our **Naam Karma**

By accepting the God's servanthship

- We destroy our **Gotra Karma**

By performing Puja with correct method

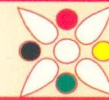
- We destroy our **Antraya Karma**

By thinking of Soul as non-perishable

- We destroy our **Aayushya Karma**



JAIN ALPHABETS

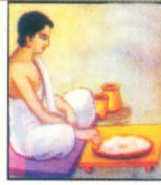


A



ARIHANT

B



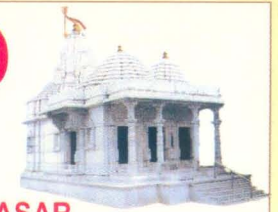
BIYASANA

C



CHARAVALO

D



DERASAR

E



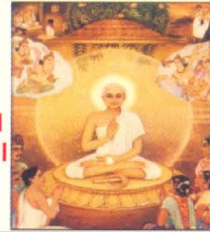
EVENING PRAYER

F



FORGIVENESS

G



GAUTAM
SWAMI JI

H



HELP

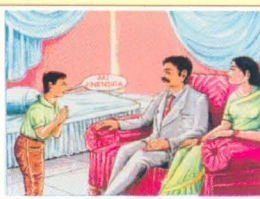
I

EYE
EAR
NOSE
SKIN



INDRIYA Tongue

J



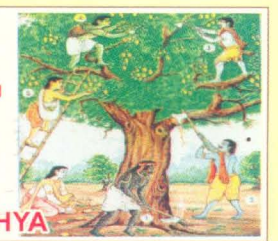
JAI JINENDRA

K



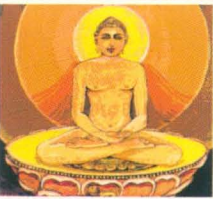
KARMA

L



LESHYA

M



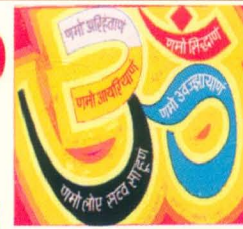
MAHAVIR BHAGWAN

N



NAVKAR MANTRA

O



OM

P



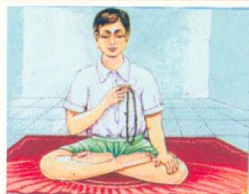
PATHSHALA

Q



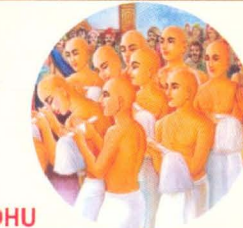
QUEEN TRISHLA

R



ROSARY (JAAP)

S



SAADHU

T



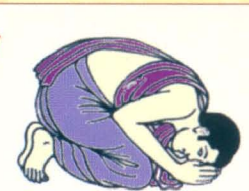
TEMPLE

U



UPASHRAYA

V



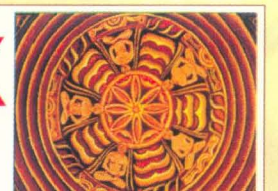
VANDAN

W



WORSHIP (PUJA)

X



XYLOGRAPHY

Y



YOGA

Z



ZALAR



आओ सीखे व्यंजन



क

कलश



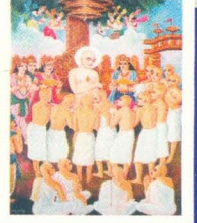
ख

खमासमण



ग

गणधर



घ

घंट



ङ

च

चामर



छ

छत्र



ज

जीवदया



झ

झालर



ञ

अञ्जनशलाका



ट

टी.वी.त्याग



ठ

ठवणी



ड

डंडासन



ढ

ढोलक



ण

णमो
जिणाणं



त

तपस्या



थ

थाल



द

दर्पण





આઓ સીખે વ્યંજન



ધ



ધૂપદાની

ન

નૈવેદ્ય



પ

પાત્રા



ફ

ફલ પૂજા



બ

બરાસ



ભ

ભગવાન



મ

મુગટ



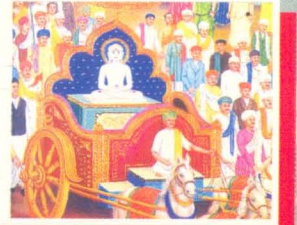
ય

યંત્ર



ર

રથયાત્રા



લ

લવણ સમુદ્ર



વ

વિહાર



શ

શંખ



ષ

ષટ્કાય જીવ



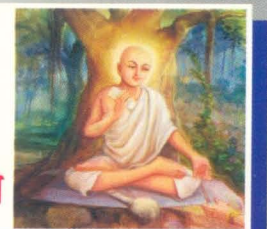
સ

સમવસરણ



હ

હરિભદ્રસૂરિજી



ક્ષ

ક્ષમા



ત્ર

ત્રિશલા માતા



જ્ઞ

જ્ઞાન



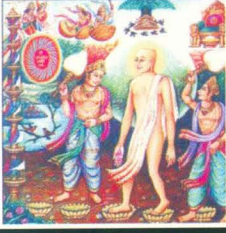


आओ सीखे व्यंजन



अ

अरिहंत



आ

आचार्य



इ

इन्द्र



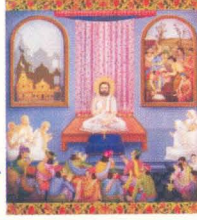
ई

ईश्वर



उ

उपाध्याय



ऊ

ऊनी कामली



ऋ

ऋषभ



ए

एकेन्द्रिय जीव



ऐ

ऐरावत
हाथी



ओ

ओघा



औ

औषधि



अं

अंजनशलाका



अः

ऐँ नमः



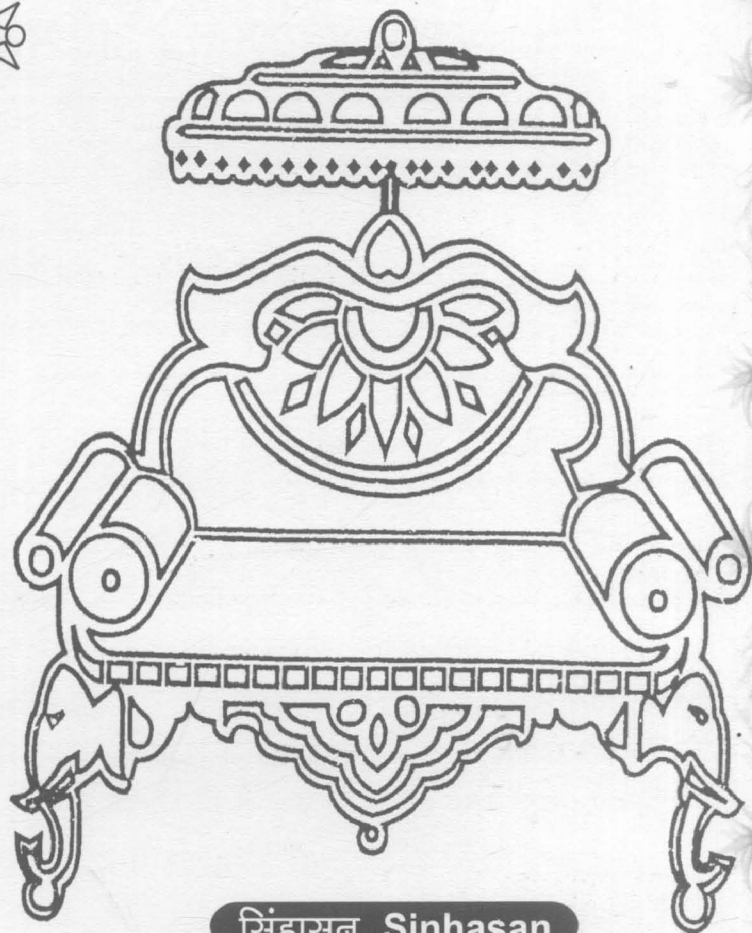


अष्टमंगल / Ashtamangal

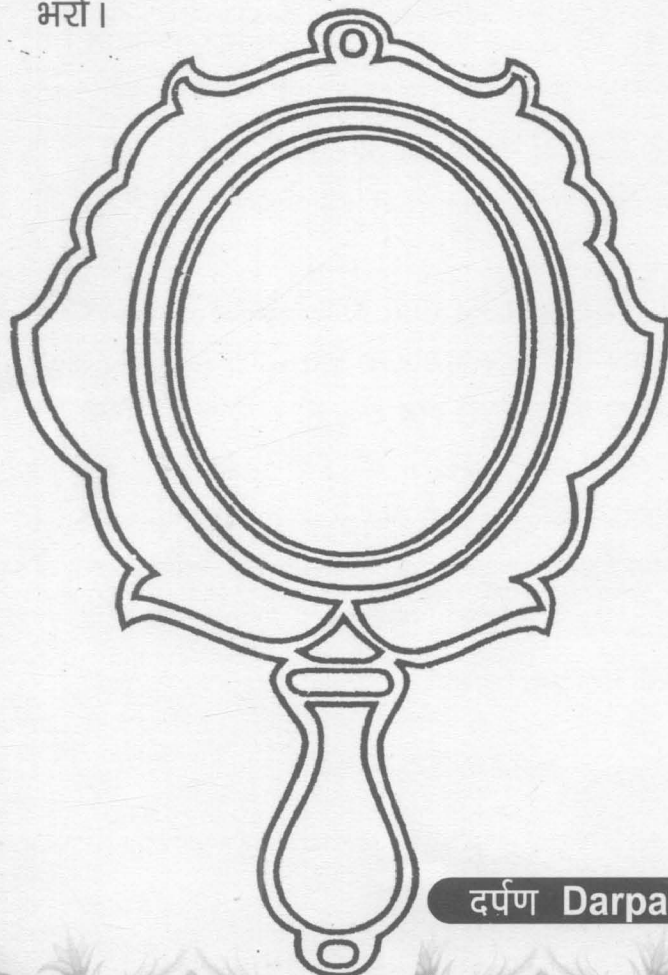


प्यारे बच्चो !

अपने शास्त्रों में आठ प्रकार के मंगल चिन्ह बताए गए हैं। उन्हें अष्टमंगल कहते हैं। ये मांगलिक (शुभ) माने जाते हैं। इन्हें भगवान के सामने आलेखना (चावल से बनाना) होता है। आप मंदिर में साथिया बनाते हो, तो ये आठ भी बना सकते हो। इन अष्टमंगल की पट्टी घरों के दरवाजे पर लगी होती हैं। देवलोक के देवविमान में, समवसरण में ये आकार होते हैं, गुरुभगवंत के ओघे में भी ये आकार होते हैं। उन आठ अष्टमंगल में से यहाँ दो बताए गए हैं। सावधानीपूर्वक ध्यान से देखकर रंग भरो।



सिंहासन Sinhasan



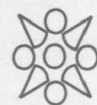
दर्पण Darpan

Dear children !

There are 8 types of "Mangal Chinnha (Symbols)" in our "Shastras", Which are called "Ashtmangal". These are considered as a good sign. These are made with rice in front of God. If you can make a "Sathiya" in the temple, you can make these also. "Ashtmangal" can also be seen on the housedoors, in the "Dev Viman" of heaven, in the "Samvsaran" and in the "Ogha" of Guru Bhagvant. Two of the Astmangals are shown here. colour them carefully.



प्रभु भक्ति की अद्भुत शक्ति – पेथड़शाह



पेथड़शाह मांडवगढ़ के मंत्री थे। स्वयं के जैन होने का एवं जिनशासन की प्राप्ति का उन्हें असीम गौरव था। मंत्री पद स्वीकार करते समय राजा को भी स्पष्ट कह दिया था – **आपके राज्य के सारे काम करुंगा पर मेरे लिए प्रथम स्थान पर देव-गुरु-धर्म और फिर राज्य होगा।**

कैसी अनुपम शासन निष्ठा! मंत्रीवर की प्रभु भक्ति भी अद्वितीय थी। जब भी देरासर में पूजा के लिए प्रवेश करते, बाहर एक चौकीदार रखते ताकि पूजा में कोई बाधा न डाले।

एक बार राजा को समाचार मिले कि कोई राजा एक बड़ी सेना लेकर आक्रमण करने आ रहा है। राजा ने तुरंत महामंत्री को बुलवाने हेतु आदेश दिया। वह समय पेथड़शाह की पूजा का था। राजसेवक देरासर के द्वार पर पहुँचा। परन्तु चौकीदार ने उसे बाहर ही रोक दिया – अभी मंत्रीजी का पूजा का समय है। आप भले राजा का संदेश लाए हैं परन्तु उनके लिए भगवान ही सर्वोच्च हैं। राजसेवक ने वापिस लौटकर सारी बात राजा को बताई। राजा सोचने लगा, अरे युद्ध की तैयारी नहीं करेंगे तो राज्य हाथ से निकल जाएगा। मुझे स्वयं ही वहाँ जाकर बात करनी चाहिए। यह सोचकर राजा स्वयं देरासर पहुँचते हैं। मंत्रीवर से मिलने की इच्छा व्यक्त करते हैं। चौकीदार ने राजा को नम्रतापूर्वक जवाब दिया कि, माफ कीजिएगा महाराज! यह मंदिर है। यहाँ मंत्री जी सिर्फ प्रभु से ही मिलते हैं।

पेथड़शाह कैसी भक्ति करते होंगे, यह पता करने के लिए राजा ने मंदिर में प्रवेश किया। पेथड़शाह प्रभु में एकाकार होकर पुष्प पूजा कर रहे थे। माली 1-1 फूल देता जा रहा था और पेथड़शाह फूलों की सुंदर आंगी बनाते जा रहे थे। प्रभु के मुखकमल पर नयन स्थिर थे। ये सब देखकर राजा का मन प्रसन्नता एवं अहोभाव से भर जाता है। प्रभु की भक्ति का जादू ही ऐसा है कि मन पूरी तरह से तनाव मुक्त होकर आनन्द की अनुभूतियों में डूबने लगता है। राजा ने इशारे से माली को हटाया और स्वयं फूल देने का कार्य करने लगे। परन्तु क्रम में गड़बड़ होने से पेथड़शाह ने पीछे दृष्टि की। राजा को देखने के बावजूद भी मौनपूर्वक पूजा-भक्ति आदि करके बाहर आए।

राजा कहने लगे – मंत्रीवर! दुश्मन राजा बड़ी सेना लेकर राज्य पर धावा बोलने आया है। सुरक्षा की व्यवस्था नहीं करोगे तो राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। मंत्रीश्वर बोले – महाराज ! आप निश्चित रहिए। आज आप प्रभु भक्ति से जुड़े हैं यह एक शुभ संकेत है। **देव-गुरु की कृपा से सब ठीक हो जायेगा।** इसी दौरान गुप्तचर ने आकर सूचना दी कि, जो राजा युद्ध के लिए आया था वह किसी वजह से वापस लौट रहा है। कारण का पता नहीं चला किन्तु राज्य के ऊपर आने वाली विपत्ति दूर हो गई है। सुनकर राजा आश्चर्य मुग्ध हो गया। प्रभु भक्ति का अलौकिक प्रभाव देखकर उनकी श्रद्धा आसमान को छूने लगी। बाद में उन्होंने शासन प्रभावना के अनेक कार्य किए।

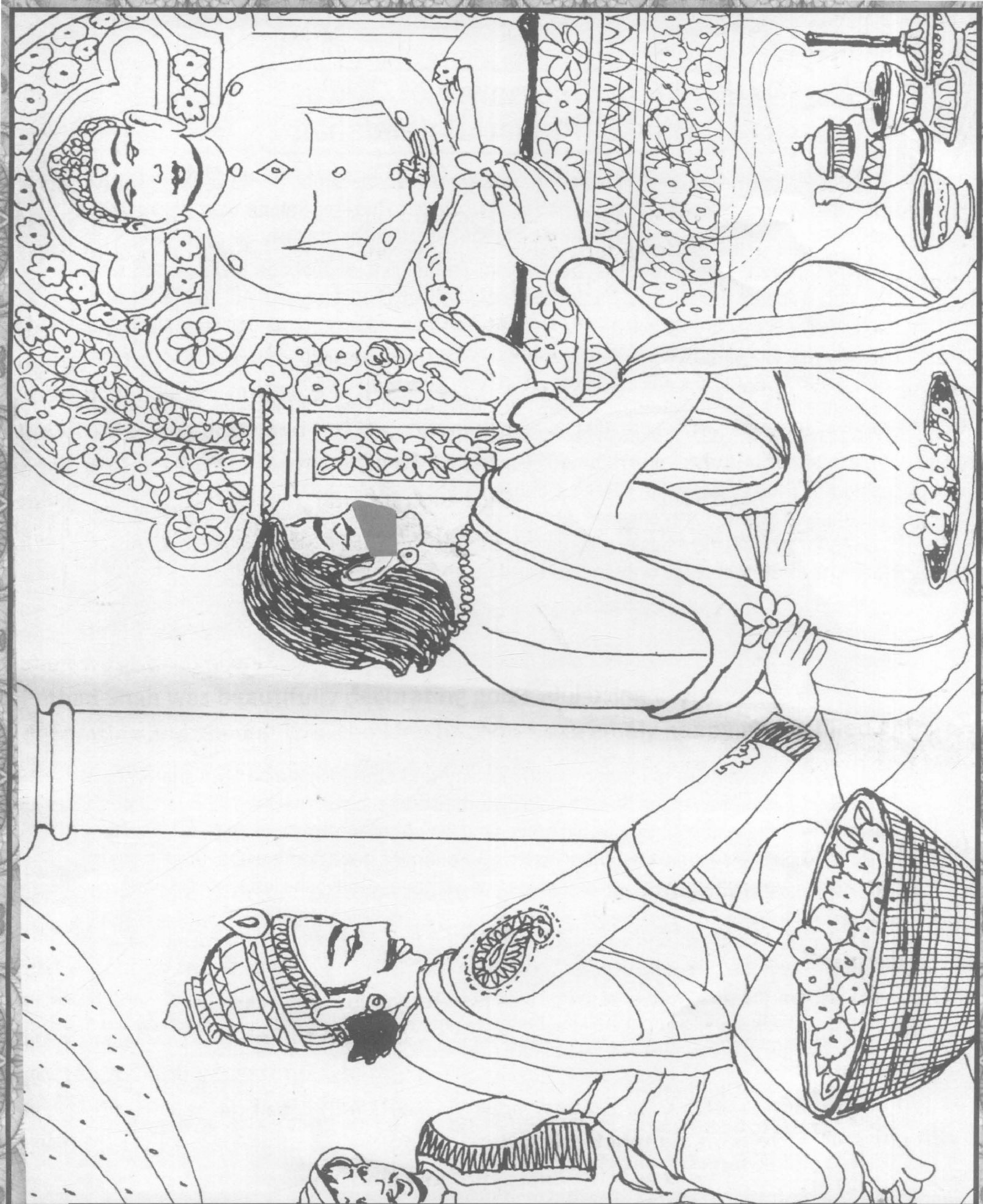
ऐसे शासन प्रेमी – प्रभु प्रेमी – गुरु प्रेमी थे पेथड़शाह महामंत्री।

⇒ बोध : प्यारे बच्चो.....

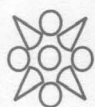
◎ मैं जैन हूँ ऐसा जज्बा हमेशा दिल में रहे।

◎ देरासर में प्रभु के अलावा सारी दुनिया को भूल जाना।

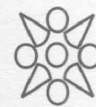
◎ प्रभु भक्ति में एकाग्र होने से मन प्रसन्नता से भरपूर बनता है।



4. प्रभु भक्ति की अद्भुत शक्ति - पेथड़शाह /
Incredible power of God's Bhakti (Prayer) - Pethadshah



Incredible power of God's Bhakti (Prayer) Pethadshah



Pethadshah was the Minister of Mandavgarh. He was proud to be a Jain. Before accepting the post of the minister he had made it clear to the king that **he would do all the work of the kingdom but for him religion is first and then is the duty towards kingdom.**

What a great loyalty towards the religion! The minister's devotion towards god was amazing. Whenever he would go to the temple he would post a guard outside so that no one would disturb him while in prayer. One day the king received news that another king is approaching his kingdom along with a huge army to attack them. The king immediately sent a messenger to the minister. That was the prayer time of Pethadshah. The messenger reached the Temple's door. But the guard stopped him outside, saying that it is his prayer time. You might have brought the king's message but for the minister prayer is at top priority. The messenger returned back to the king and narrated his conversation with the guard. The king thought - Oh ! If we don't prepare for the war, the kingdom would slip off my hands. I should go there myself and talk to him. So, the king himself goes to the temple and wishes to meet the minister. The guard politely says - Forgive me. **But this is a temple. Here, the minister meets only the god and no one else.**

What kind of prayer Pethadshah does ? To know this, the king entered the temple. Pethadshah was worshiping the god with the flowers. The gardener was handing him over one flower at a time, and Pethadshah was beautifully decorating god's idol using them. He was totally involved in decorating god. Seeing this, the king becomes extremely happy and is filled with respect for the minister. The magic of god's worship is such that the mind calms down and becomes tensionless.

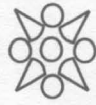
The king asked the gardener to move away and started handing over the flowers himself. But the series of the flowers gets disturbed and minister looks back. Even though he saw the king, he continued with his prayer and worship devotedly and only after finishing it he came out. The king said - Oh minister! Our enemies have come with a huge army to attack us. If we don't increase our securities, we will have to leave the kingdom forever. The minister said - you need not worry. Today you were engaged in god's worship. This is a good sign. **God's blessings will make everything fine.** At this time a secret messenger came and said that, the king who was coming to attack, has returned back. The reason is unknown but the danger is now over. Hearing this, the king became astounded. Seeing God's worship's shining effect the king became more devoted towards God. Later he did a lot of social service. Pethadshah was such a great devotee of religion, Guru & God.

⇒ **Moral : Dear Children,**

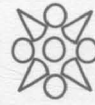
◎ **Be proud to be a Jain.**

◎ **You should forget all other things, except god when in a temple.**

◎ **Concentrating on god's worship makes us very happy.**



चंदनबाला



चंपानगरी के राजा दधिवाहन थे। उनकी धारणी नामक रानी एवं वसुमती नामक पुत्री थी। वह राजकन्या बेहद गुणवंती, ज्ञानवंती एवं धर्मनिष्ठ थी। राजवैभव के सुखों के बीच पल रही वह कन्या भविष्य के दुःखों से बेखबर थी। **कर्मों के इशारे पर सभी जीवों को नाचना पड़ता है** – यह बात इस कहानी से स्पष्ट होती है।

एक बार कौशांबी के राजा शतानिक ने चंपानगरी पर आक्रमण किया। नगर को लूटा तथा राजकुमारी को भी उठाकर ले गए। एक सैनिक धन के लालच में उसे बेचने ले गया। वहाँ से गुजर रहे धनवाह सेठ की नजर उस पर पड़ी। अनुपम सौंदर्य और प्रभावी चेहरा देखकर लगा कि यह किसी उच्च खानदान की कन्या है। तब उन्होंने योग्य कीमत देकर उसे खरीद लिया।

देखा कर्म का करिश्मा! राजा की पुत्री को भी बिकना पड़ा। सेठ उसे पुत्री के समान मानते। वसुमती भी सेठ को पिता तुल्य समझती। इस कन्या में सेवा, विनय आदि साहजिक गुण थे। जो भी संपर्क में आता, चंदन के समान शीतलता अनुभव करता। इसलिए सेठ उसे चंदना कहकर बुलाने लगे।

जिसमें नम्रता, विनय, विवेक वगैरह गुण होते हैं वह सभी का प्रिय बनता है। चंदना भी अपने गुण वैभव के बल पर सबकी चहेती बन गई थी।

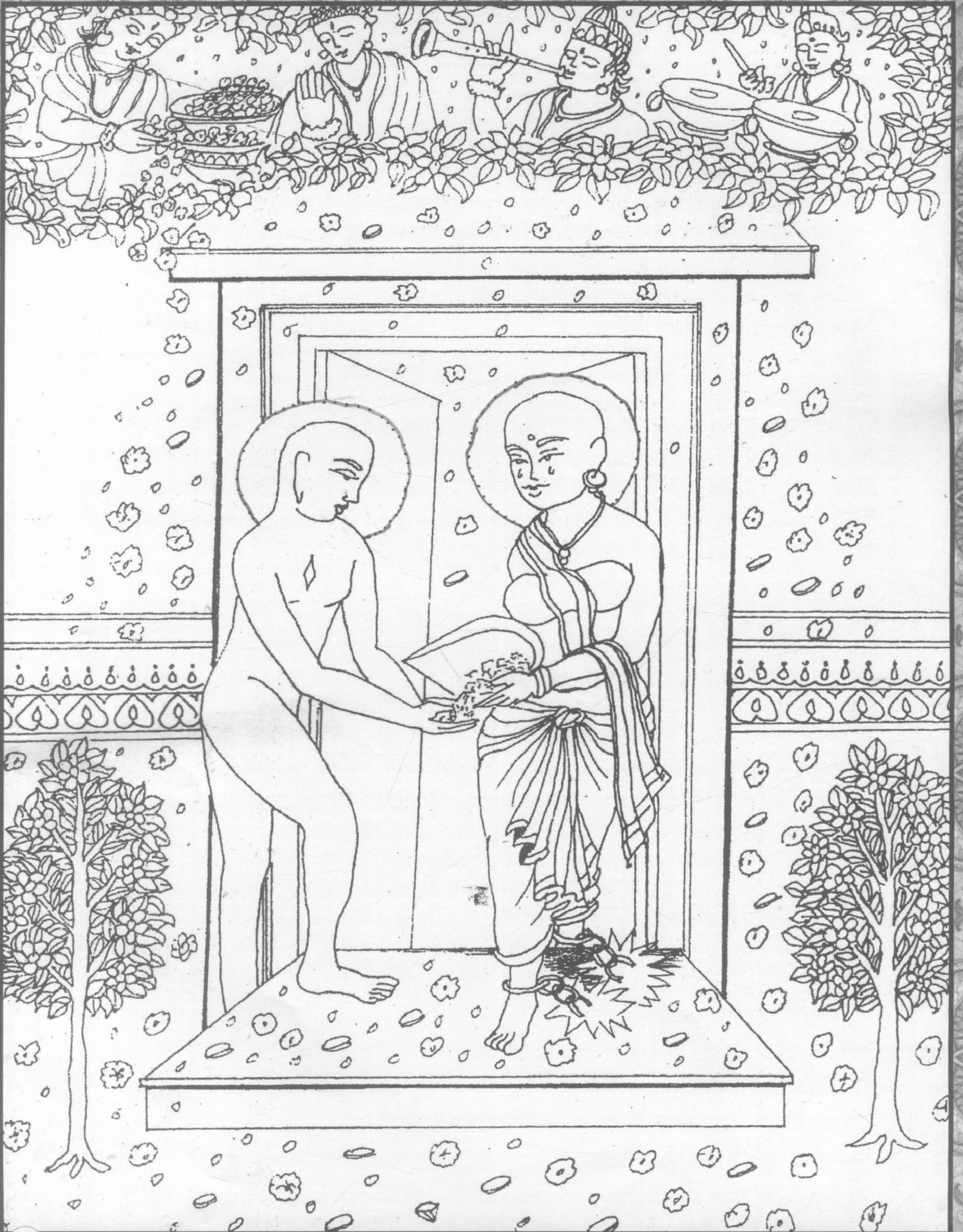
एक बार बाहर से आए धनवाह सेठ के पैर धुलवाते हुए चंदना के लम्बे बाल नीचे गिरने लगे। गंदे पानी में गिरते बालों को सेठ ने अपने हाथों से ऊपर कर दिया। यह देख सेठ की पत्नी मूला के मन में ईर्ष्या की आग जल उठी। सेठ के बाहर जाने पर मूला सेठानी ने चंदना का सिर मुंडित कर, पैरों में बेड़ी डाल कर उसे तलघर में बंद कर दिया। चंदना तीन दिन तक भूखी-प्यासी, प्रभु के नाम का स्मरण करती वहाँ रही। बाहर गाँव से वापस आने पर सेठ ने चंदना के न दिखने पर तलाश करवाई। अंत में सारे घटनाक्रम का पता चला। चंदना की दयनीय दशा देखकर सेठ लुहार को बुलाने हेतु जाने लगे। जाते-जाते दूसरा कुछ न मिलने पर पशुओं के खाने के उड़द के बाकुले, सुपड़े में चंदना को खाने के लिए दे गए।

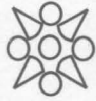
इधर कौशांबी नगरी में वीर प्रभु विराजीत थे। प्रभु का अभिग्रह (नियम) था कि, राजकुमारी से दासी बन चुकी हो, अठ्ठम का तप हो, दोपहर का समय हो, आँखों में आँसू हो, एक पैर दहलीज के बाहर और एक अंदर हो ऐसी कन्या, सुपड़े में से उड़द के बाकुले वहोराए तभी आहार ग्रहण करना। प्रभु को 5 महीने व 25 दिन के उपवास हो चुके थे, परन्तु अभिग्रह पूर्ण नहीं हुआ था। आज प्रभु धनवाह सेठ के द्वार आए। अपने अभिग्रह की सारी शर्तों को पूर्ण देखकर प्रभु ने चंदना से उड़द के बाकुले ग्रहण किए। भिक्षा ग्रहण करते ही दैवीय चमत्कार का सर्जन हुआ। बेड़िया टूट गई और मस्तक पर सुंदर केश आ गए। आकाश में से पुष्पवृष्टि हुई। राजा शतानिक और मूला सेठानी ने अपनी भूलों के लिए क्षमा माँगी।

प्रभु को केवलज्ञान उत्पन्न होने के बाद चंदनबाला ने प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की। प्रभु की प्रथम साध्वी व श्रमणी संघ की प्रवर्तनी बनी। संयम धर्म की आराधना कर अंत में मोक्ष प्राप्त किया।

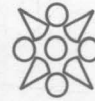
⇒ **बोध : प्यारे बच्चो,**

- ◎ धन-संपत्ति, वैभव चंचल है, कभी भी हमें छोड़कर चले जायेंगे।
- ◎ व्यक्ति गुणों से प्रिय बनता है अतः विनय, नम्रता आदि गुणों के लिए प्रयास करना चाहिए।
- ◎ आपत्ति के समय भी मन को प्रसन्न रखना, अंत में सत्य की जीत होती है।





Chandanbala



The King of Champanagri was Dadhivahan. His queen was Dharni and their daughter was Vasumati. This princess was intelligent and also very religious. She was enjoying luxurious life but was unaware about what wrong is going to happen in her future. This story proves that - **we all have to dance on the tunes of karma.**

One day the king of Kausambi, Shataanik, attacked Champanagri. The army robbed the city and also kidnapped the princess. One of his soldiers wanted to sell the princess for money. A merchant Dhanvah saw her beauty and attractive face and understood that she must be a girl from a royal family. So he gave the money and bought her.

This is the magic of karma! Even a princess had to get sold. Dhanvah Seth used to regard her as his daughter. She also respected him as her father. She graciously served people. Whosoever she would help would feel the calmness and peace of "Chandan" (sandalwood). Therefore, Dhanvah Seth called her Chandana lovingly.

Those who are kind, polite, etc. become everyone's favourite in no time. Chandana also became everyone favourite in no time due to her good qualities.

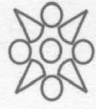
Once while washing the feet of Dhanvah Seth, who came home from outside, her long hair began falling in dirty water. Seeing this, Seth put her hair back in place. This aroused a feeling of jealousy in the mind of his wife, Moola, who saw this. So, when Dhanvah left for other town, Moola sheared off Chandana's hair and chained her legs and put her in the basement. For three days Chandana was without any food or water, but she kept praying to god. When the Seth returned, he could not see Chandana anywhere, so he ordered to search her around. In the end, he came to know about all the events. Seeing Chandana's poor condition he went to bring the blacksmith for cutting Chandana's chains. Before leaving he gave Chandana boiled urad in a supadi to eat.

At Kaushambi nagar, Lord Mahavir was present at that time. He had a vow of that if a princess who had turned into a maid, who had done fast for 3 days, has tears in her eyes, has one leg inside and one outside threshold (Dehlij) offers 'Urad ke bakule' in a 'supadi' during noon time. only then he would accept the good and break his fast. Prabhu had already completed 5 months 25 days in search of such a girl. Today Prabhu had come to the house of Dhanvah Seth where he saw Chandana and realised that all the conditions of his vow were satisfied, and so he accepted the 'Urad ke bakule' from her. As soon as he accepted the offerings, a miracle happened. The chains were broken and Chandana's beautiful hairs grew back, flowers and gold started raining. King Shataanik and Moola asked for forgiveness.

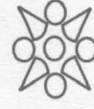
After Prabhu obtained Keval Gyan, Chandanbala accepted 'Diksha' from Lord Mahavir. She became her first female sage and became the head of all the female sages. Eventually she got Keval Gyan and Moksha.

⇒ **Moral : Dear Children,**

- ◎ **Money, wealth come and go, they can leave us any time.**
- ◎ **People become beloved because of their qualities. We should try to inculcate the qualities like kindness, nobleness etc. within us.**
- ◎ **We should remain happy even in bad times. In the end truth always wins.**



ज्ञानावरणीय कर्म

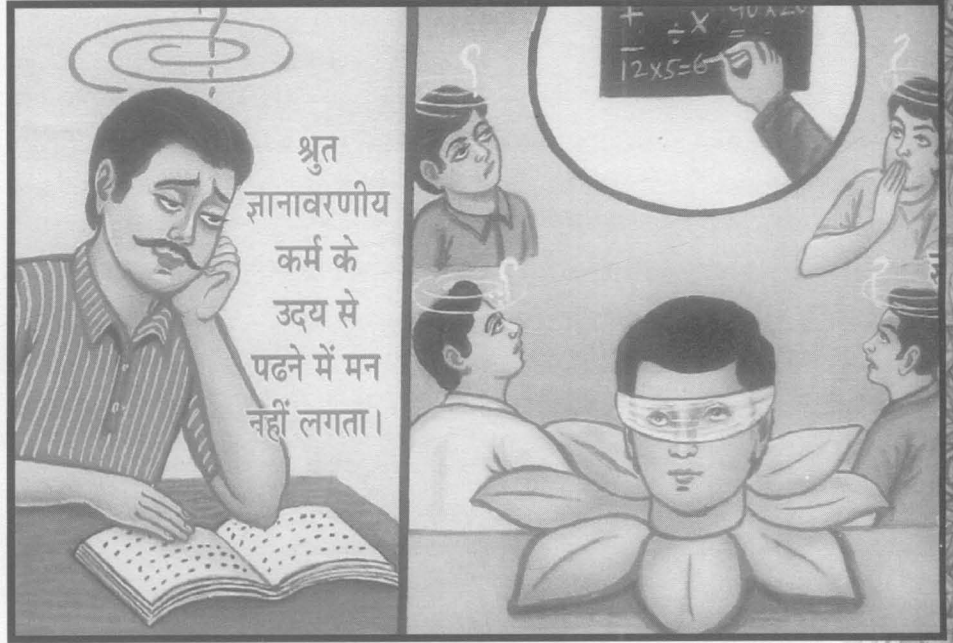


प्यारे बच्चों...

किसी के पास बुद्धि ज्यादा होती है, किसी के पास बुद्धि कम होती है। कोई ज्ञानी होता है तो कोई मूर्ख होता है। यह ज्ञानावरणीय कर्म के कारण होता है।

◎ ऐसी विषमता क्यों ?

कोई पढ़ने में होशियार होता है, कोई मंद होता है तो कोई बार-बार याद करने पर भी भूल जाता है। इनका कारण भी यही कर्म होता है।



◎ इस कर्म का फल ...

1. इस कर्म के कारण स्मरण किया हुआ अथवा सुना हुआ भूल जाते हैं।
2. किसी दूसरे के मनोभाव को भी समझ नहीं पाते हैं।
3. विश्व के जीव व अजीव पदार्थों का ज्ञान भी कर नहीं पाते हैं।
4. इस कर्म के कारण ही गूंगे, बहरे, रोगी और पागल बनते हैं।

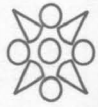
◎ यह कर्म कैसे बंधता है ?

1. झूठे मुँह बोलने से, कागज में भोजन करने से इस कर्म का बंध होता है।
2. अपशब्द बोलने से, टी.वी. देखने से, झूठ बोलने से इस कर्म का बंध होता है।
3. अक्षर वाले कपड़े पहनने से, कागज जलाने से भी इस कर्म का बंध होता है।

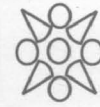
◎ इस कर्म का नाश कैसे होता है ?

मौनपूर्वक भोजन करने से, टी.वी. देखते हुए भोजन नहीं करने से, धार्मिक गाथा याद करने से, देव, गुरु व श्रुत (ज्ञान) की भक्ति करने से, मधुर बोलने से, ज्ञान के ऊपर पैर व थूक नहीं लगाने से, ज्ञानावरणीय कर्म का नाश होता है।

◎ ज्ञानावरणीय कर्म आँखों पर पट्टी के समान है।



Gyanavarniya Karma



Dear Children,

Someone is intelligent and someone is not. Someone is knowledgeable and someone is fool.

This difference is due to Gyanavarniya Karma.

Why is this difference ?

Someone is bright in studies whereas someone forgets even after learning repeatedly. The reason is this karma only.



◎ **Results of this karma**

1. Due to this karma we forget the things we learn or we listen.
2. We can not understand the intentions of others.
3. We can not understand the living and non living things of the world.
4. Due to this karma one becomes deaf, dumb, ill and mad.

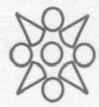
◎ **Reasons of acquisition (accumulation) of this karma**

1. Speaking while eating, eating in papers, etc. lead to this karma.
2. Absuining, watching T.V., telling lie, etc. lead to this karma.
3. Wearing the clothes having letters, burning papers etc. lead to this karma.

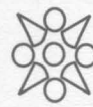
◎ **How can we overcome this karma ?**

Eating silently, not eating while watching T.V., learning religious gathas, speaking softly, respecting books, not spitting on them.

◎ **Gyanavarniya karma is like a bandage on eyes.**



दर्शनावरणीय कर्म



प्यारे बच्चों.....

इस कर्म के कारण हम दीवार के पीछे की वस्तु नहीं देख पाते हैं । बहुत दूर रही वस्तु को भी नहीं देख पाते हैं । जाग्रत ऐसी आत्मा को निद्राधीन करने का कार्य यह कर्म करता है ।

◎ ऐसी विषमता क्यों ?

कोई व्यक्ति एकाग्रता से पढ़ता है तो किसी को बैठे-बैठे ही नींद आ जाती है; किसी को चलते-चलते, खड़े-खड़े भी नींद आ जाती है । इसका कारण यही कर्म है ।

◎ इस कर्म का फल ...

1. इस कर्म के कारण हमारी आँखों की देखने की शक्ति कम हो जाती है ।
2. कानों की सुनने की क्षमता कम हो जाती है ।
3. नाक की सूंघने की क्षमता कम हो जाती है ।
4. जीभ की स्वाद लेने की क्षमता कम हो जाती है ।
5. स्पर्श के द्वारा पहचानने की शक्ति भी कम हो जाती है ।

◎ यह कर्म कैसे बंधता है ?

देव-गुरु की निंदा करने से, देव द्रव्य व साधारण द्रव्य का नाश करने से यह कर्म बंधता है । देव-गुरु की आशातना करने से इस कर्म का बंध होता है । पूजा के उपकरण व ज्ञान, चारित्र के उपकरणों की आशातना करने से भी इस कर्म का बंध होता है ।

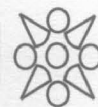
◎ इस कर्म का नाश कैसे होता है ?

परमात्मा के दर्शन-पूजन करने से, परमात्मा की स्तुति करने से, जिन-धर्म की प्रभावना हो ऐसे कार्य करने से, गुरु भगवंत को वोहराने से व प्रवचन श्रवण आदि करने से दर्शनावरणीय कर्म का नाश होता है ।

◎ दर्शनावरणीय कर्म राजा के द्वारपाल के समान है ।



Darshanavarniya Karma



Dear Children,

Because of this karma we can not see an object kept behind a wall or the things very far from us. This karma keeps the soul into sleeping state.

☉ Why is this difference ?

Some person can concentrate well while studying whereas some other person sleeps; some one sleeps while walking or standing. This happens due to this karma.

☉ Results of this karma

1. It decreases our vision power.
2. It decreases our hearing power.
3. It decreases our capability of smelling.
4. It decreases our capability of taste.
5. It decreases our sense of touching.

☉ Reasons of acquisition of this karma

1. Condemning Dev-Guru, Destroying Dev-Dravya, Sadharan Dravya.
2. Disrespecting Dev-Guru.
3. Disrespecting the (objects) upkaran of Puja, Gyan, Charitra etc.

☉ How to destroy this karma ?

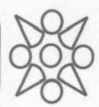
1. Worshipping God (Darshan - Pujan - Stuti etc).
2. Working for spreading of Jin-Dharma.
3. Listening discourses of Guru Bhagvant etc.

☉ This karma is like the Guard or Gate keeper of a king.





साधु-साध्वीजी से बात करते समय बोले जाने वाले सही वाक्य



प्यारे बच्चो ! ध्यान रखो,

साधु-साध्वीजी भगवंतों के पास जाने पर नीचे दिए गए अनुसार सही वाक्य बोलो और आशातना से बचो ।

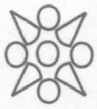
(म.सा. = महाराज साहब)

गलत वाक्य

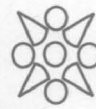
म.सा. आप कब आए ?
 म.सा. नमस्ते / गुडमार्निंग
 म.सा. सॉरी
 म.सा. भोजन लेने आओ
 म.सा. गुडनाइट
 म.सा. खाना खा रहे हैं
 म.सा. कपड़े धो रहे हैं
 म.सा. बाल तोड़ रहे हैं
 म.सा. कपड़े आगे पीछे कर रहे हैं
 म.सा. आपकी तबीयत कैसी है ?
 म.सा. बिस्तर बिछा रहे हैं
 म.सा. आपको कोई चीज चाहिए ?
 म.सा. सो गए हैं
 म.सा. झाड़ू निकाल रहे हैं
 म.सा. जा रहे हैं
 म.सा. मर गये हैं
 म.सा. का लेक्चर सुंदर हैं
 म.सा. आप ठीक हो ?
 म.सा. तो रोज घुमते हैं
 म.सा. आप कितने लोग हो ?
 म.सा. आप कहाँ से आ रहे हो ?
 म.सा. गोचरी लेने आना

सही वाक्य

- म.सा. आप कब पधारे ?
 - म.सा. मत्थएण वंदामि
 - म.सा. मिच्छामि दुक्कड़म्
 - म.सा. गोचरी लेने पधारो
 - म.सा. त्रिकाल वंदना
 - म.सा. गोचरी वापर रहे हैं
 - म.सा. काप निकाल रहे हैं
 - म.सा. लोच कर रहे हैं
 - म.सा. पड़िलेहण कर रहे हैं
 - म.सा. आप सुखशाता में हो ?
 - म.सा. संथारा कर रहे हैं
 - म.सा. आपको किसी चीज का खप है ?
 - म.सा. संथारा कर गए हैं
 - म.सा. काजा ले रहे हैं
 - म.सा. विहार कर रहे हैं
 - म.सा. का कालधर्म हो गया है
 - म.सा. का प्रवचन सुंदर है
 - म.सा. आप शाता में हो ?
 - म.सा. तो रोज विहार करते हैं
 - म.सा. आप कितने ठाणा हो ?
 - म.सा. आप कहाँ से पधार रहे हो ?
 - म.सा. भात-पानी (गोचरी) का लाभ देना



Correct Sentences to be spoken while talking to Sadhu-Sadhvi Ji



Dear Kids !

Take care of speaking correct sentences given below, when you go to Sadhu-Sadhvi Ji Bhagwant :

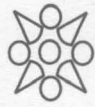
M.S. = Maharaj Saheb

Incorrect Sentence

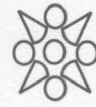
M.S. When did you come ?
Good Morning M.S.
Sorry M.S.
M.S. Please come for food
Good night M.S.
M.S. is eating food
M.S. is washing clothes
M.S. is plucking hairs
M.S. is turning clothes
M.S. How are you ?
M.S. is preparing bed.
M.S. Do you need anything ?
M.S. has slept
M.S. is sweeping floor
M.S. is going
M.S. passed away (died)
M.S. gives good lecture
M.S. are you fine ?
M.S. travels every day
M.S. how many you are ?
M.S. where are you coming from ?
M.S. come for food

correct Sentence

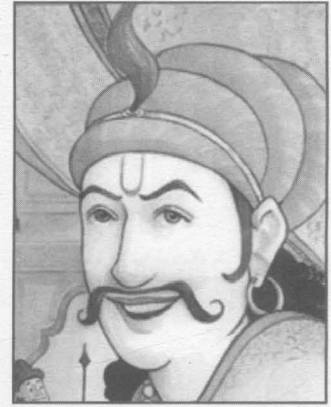
- M.S. Aap kab padhare ?
- M.S. Matthen vandami
- M.S. Michhami dukkadam.
- M.S. Gochari lene padharo
- M.S. Trikal vandana
- M.S. gochari vapor rahe hain
- M.S. kap nikal rahe hain
- M.S. loch kar rahe hain
- M.S. padilehan kar rahe hain
- M.S. Aap sukh shata mein ho ?
- M.S. santhara kar rahe hain
- M.S. Aapko koi khap hai ?
- M.S. santhara kar gaye
- M.S. kaja nikal rahe hain
- M.S. vihar kar rahe hain
- M.S. ka kaldharma ho gaya
- M.S. ka pravachan sundar hai.
- M.S. Aap shata mein ho ?
- M.S. roj vihar karte hain
- M.S. Aap kitne thana ho ?
- M.S. Aap kahan se padhar rahe ho ?
- M.S. Gochari ka labh dena.



आम किसके ?



एक गांव में दो किसान रहते थे, लवजी और भवजी। वे दोनों भाई थे। दोनों इस बात पर लड़ाई कर रहे थे कि खेत में जो आम का पेड़ है वह किसका है। लवजी कहता है कि, वह आम का पेड़ और उस पर लगे आम मेरे हैं। जबकि भवजी कहता है कि, उस पेड़ को मैंने सात साल पानी पिलाया है, उसकी देख-रेख की है इसलिए वह पेड़ और उसके आम मेरे हैं।



झगड़ा राजा अकबर और उनके महामंत्री बीरबल के पास पहुँचा। अकबर और बीरबल ने कहा, आप दोनों अभी घर जाइये। इस मामले पर न्याय कल किया जाएगा।

दोनों भाइयों के घर के लिए रवाना हो जाने के बाद बीरबल ने एक चौकीदार को बुलाया और कहा, तू सादे कपड़े पहन कर दोनों किसानों के घर जाकर कहना कि, तुम्हारे आम कोई चुरा रहा है। और यह सुनकर वे क्या जवाब देते हैं, बताना।

सबसे पहले चौकीदार लवजी के घर गया और कहा, कोई तुम्हारे आम चोरी कर रहा है। जल्दी चलो। तब लवजी ने कहा, ले जाने दो। मेरे पास अभी समय नहीं है।

फिर चौकीदार वहाँ से भवजी के घर जाता है और वही बात दोहराता है। तब भवजी कहता है, अरे चोर आम ले जा रहे हैं ? रुको मैं अभी आता हूँ।

अब, चौकीदार बीरबल के पास आकर पूरी कहानी सुनाता है।

अगले दिन बीरबल दोनों किसानों से कहता है, एक पेड़ पर दोनों दावा कर रहे हैं इसलिए समझ में नहीं आ रहा है कि असली मालिक कौन है। इसलिए ऐसा करो, दोनों आधे-आधे आम बांट लो और फिर पेड़ काटकर उसकी लकड़ी भी आधी-आधी बांट लो।

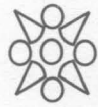
यह सुनकर लवजी ने कहा, हुजूर! आपने न्याय किया है, मुझे मंजूर है।

लेकिन, भवजी बहुत उदास हो गया और उसने आँखों में आँसू के साथ कहा कि, हुजूर! आम का पेड़ और आम, दोनों इसे ही दे दो। मैंने सात साल से पेड़ की देख-रेख की है, मैं इसके कटने की बात सहन नहीं कर सकता।

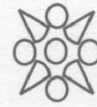
यह सब सुनने के बाद बीरबल ने लवजी से कहा, यह आम का पेड़ तेरा नहीं है। तू झूठ है, तुझे कोई पड़ेंगे और भवजी को उसका पेड़ दे दिया जाता है।

⇒ बोध : प्यारे बच्चो,

◎ इससे यह शिक्षा मिलती है कि किसी पराई वस्तु पर हमें हमारा अधिकार नहीं जमाना चाहिए।



Whose Mangoes ?



212353

Once in a village, there lived two farmers named Loveji and Bhavji. Both were brothers. They fought for the ownership of a mango tree. Loveji claimed that the mango tree and the mangoes on that tree belong to him. Bhavji claimed the same stating, "I have watered and taken care of this tree for seven years, and therefore, the mango tree and its mangoes are all mine."

They went to king Akbar and his Minister Birbal. Akbar and Birbal asked the two brothers to go home and said that, judgement on the matter will be given tomorrow. Both went back home.



After they left for their home, Birbal called a watchman and asked him to wear civil dress and go to both farmer's house and tell him that, "someone is stealing your mangoes" and then report about farmer's reaction on this.

The watchman first went to Loveji's house and told him that, "Let's rush to the field, someone is stealing your mangoes". On this, Loveji said, "Let him steal, I do not have time at this moment".

Watchman then went to Bhavji's house and told the same thing. On listening this, Bhavji got a shock and ran to the field to save mangoes.

Now, the watchman came to Birbal and told him the complete story of what happened.

Next day Birbal called both the farmers and told them that, it is not becoming clear that who is the owner of the tree, so the solution is that you divide the mangoes equally among yourself and cut down the tree and also divide its wood equally.

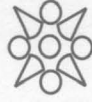
On hearing this, Loveji agreed and told, "you have done justice, Birbal".

But Bhavji became sad and with tears in his eyes said that, "Give the mango tree and mangoes to Loveji, I have cherished the tree for seven years and I can't see it being cut down."

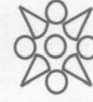
After listening to both brothers, Birbal told Loveji that, "The mango tree does not belong to you. You are a liar. The tree belongs to Bhavji". And Bhavji was given the ownership of his tree.

⇒ **Moral : Dear Children,**

© **The story teaches us not to claim the things of others.**



पहेली / Puzzle

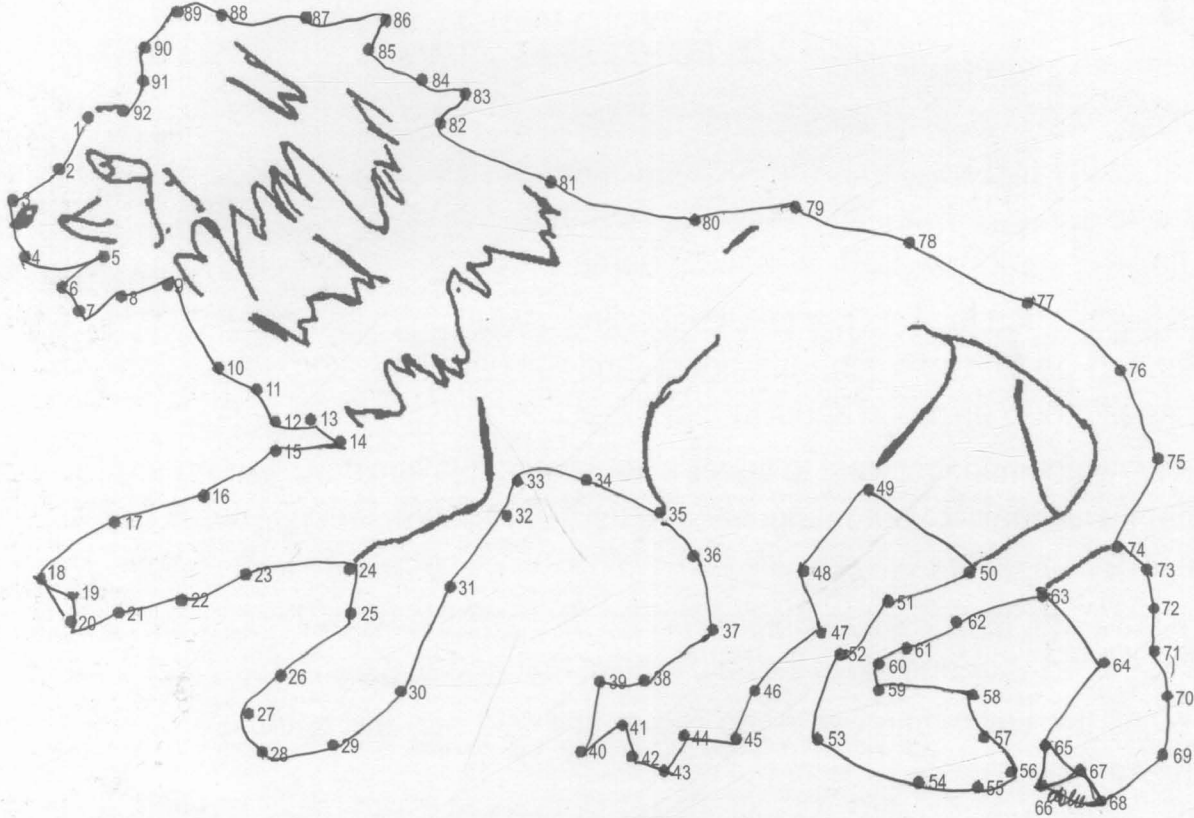


प्यारे बच्चों.....

नीचे दिया हुआ लांछन 24 तीर्थकरों में से किसी एक भगवान का है। ठीक से पहचानकर प्रश्नों के उत्तर दो एवं अंक जोड़कर लांछन में रंग भरो।

Dear Children!

The lanchhan (symbol) given below is the lanchhan of the 24 Tirthankars. Identify it correctly and answer the following questions. Also, fill the colours in the lanchhan (Joining the numbers).



1. शेर कौनसे भगवान का लांछन है ? 1. Lion is the lanchhan of which Tirthankar Bhagvan ?
2. उनकी माताजी का नाम क्या था ? 2. What was his mother's name ?
3. उनके पिताजी का नाम क्या था ? 3. What was his father's name ?
4. उनका वर्ण कौनसा था ? 4. What was his colour ?
5. उनका जन्मस्थल कौनसा है ? 5. Where was he born ?
6. उनका आयुष्य कितना था ? 6. He lived for how many years ?
7. 24 तीर्थकरों में से वे कौनसे तीर्थकर थे ? 7. What is the serial number of that Tirthankar out of 24 ?
8. उनका निर्वाण किस स्थान पर हुआ था ? 8. He attained Nirvan at which place ?

सही उत्तर : 1) महावीर स्वामी 2) त्रिशलादेवी 3) सिद्धार्थ राजा

4) पीला (सुवर्ण) 5) क्षत्रियकुंड 6) 72 साल 7) 24 8) पावापुरी

Correct Answers : 1) Mahavir Swami 2) Trishladevi 3) Siddhartha Raja

4) Yellow (Golden) 5) Kshatriyakund 6) 72 years 7) 24 8) Pawapuri.

ACHARYA SHRI KAILASSAGARSURI GYANMAHARAJ
SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandhinagar-382007
Phone : (079) 23276252, 23276204-05



प्यारे बच्चो !

अलग-अलग प्रकार के चित्र दिये गये।

पुण्य की प्रवृत्ति वाले चित्र के आगे (✓)

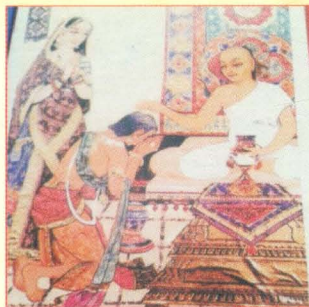
एवं पाप की प्रवृत्ति वाले चित्र के आगे (✗) करें !



EATING OUTSIDE FOOD ✗



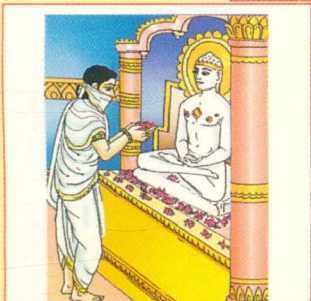
FREEING A BIRD ✗



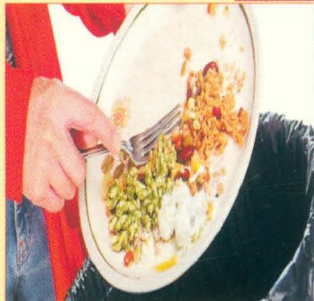
TAKING BLESSINGS ✓



FLYING KITES ✗



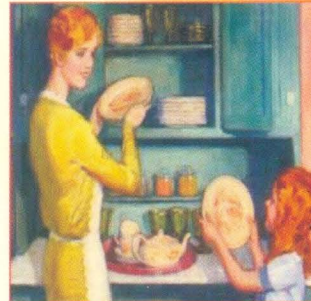
POOJA ✓



WASTING OF FOOD ✗



BEATING A DOG ✗



HELPING YOUR MOTHER ✗



PLAYING VIDEO GAME ✗



SERVING ELDERLY ✓



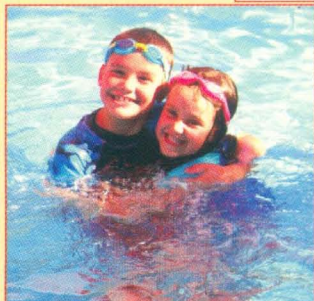
PRAYER ✓



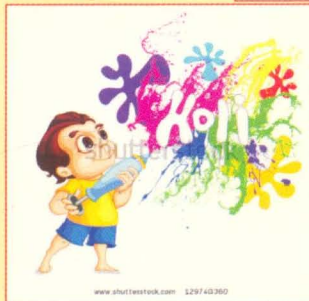
PLAYING CARDS ✗



DAMAGING THINGS ✗



SWIMMING ✗



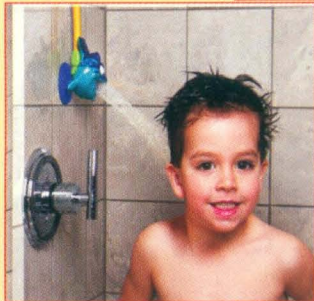
PLAYING HOLI ✗



GOSSIPING ✗



MORNING PRAYER ✓



SHOWER BATH ✗



SAMAYIK ✗



BATHING IN BATHTUB ✗



आलोक वडालिया अरुहंत मेहता अर्णव शाह अरिषा जैन भव्य रामाणी धीर रामाणी हैत शाह हिया शाह कल्प शाह महक शाह नवम चौरडिया



नीव नाहर प्रथम शाह पर्व शाह शौर्य शाह शौर्य नगावत शौर्य गोटेवाला तन्मय शाह दिशि जैन

बसंतराजजी मेहता
अनिलजी, हीतेशजी,
आयुषजी मेहता
मेहता किरण
146 इमली बाजार, इन्दौर



संस्कार सहयोगी / Sanskar Sahyogi

आप ६३००/- रु. का दान देकर संस्कार सहयोगी बन सकते हैं। आपके लाडले का फोटो १२००० मेगेझीन में प्रकाशित होगा।
You can become 'Sanskar Sahyogi' by giving donation of Rs. 6300/-. Photo of your child will be published in 12000 copies of this magazine.

Please give attantion

Now a days, our children lost their childhood in technology & Western culture. So that, they forget the importance of family life, religion, culture & nation.

If we want to make our children aware of culture & religion, want to bring their childhood back by saving them from bad effects of Mobile, T.V., Movies & make them ideal child....pls. take mobile from their hands with love & put this books in their hands.

Jainism With Art

After the tremendous response from children, your favourite treasure of knowledge, Part no. 5 to 8 is in your hands.

After January 2018, 'Jainism with Art' will be published every three month. you can become member by filling up form attached with this copy. You can receive magazine at your doorstep.

अंक 5 से 8 की
किंमत रु. 200/-

Book no. 5 to 8
Rs. 200/-



कृपया ध्यान दिजीये...

वर्तमान समय में भौतिकता एवं टेकनोलोजी की आंधी में हमारे बच्चे ऐसे गूम हो गये हैं की धर्म, संस्कृति, राष्ट्र, परिवार आदि सब भूल गये हैं।

अगर हमे हमारे बच्चो को सुसंस्कृत करना है, मोबाइल, टी.वी., सिनेमा के दूषणो से बचाकर फिरसे उनका बचपन वापस लाना है और एक आदर्श बालक और भविष्य का आदर्श श्रावक बनाना है तो अवश्य उनके हाथ से प्रेम से मोबाइल ले के यह पुस्तक थमा दिजीये...

कला द्वारा संस्कार सिंचन

बालको द्वारा अद्भुत आवकार एवं प्रतिसाद के बाद जोरदार मांग के वजह से आपका चहीता, मनपसंद ज्ञान का खजाना अंक ५ से ८ के रुप में आपके हाथ में है।

जनवरी २०१८ से 'कला द्वारा संस्कार सिंचन' मेगेझीन हर तीन महिने प्रगट होगा। इसके साथ दिये गये फोर्म भरकर आप भी जल्द सदस्य बनीये और घरबेठे मेगेझीन पाईये।

**Three Year Three Monthly Magazine
Membership Fee Rs. 500/- only**

**त्रिवर्षिय त्रिमासिक मेगेझीन
लवाजम रु. ५००/- मात्र**

फोर्म एवं रकम भेजने के संपर्कसूत्र
पूर्णानंद प्रकाशन

भावनाबेन शाह
Mo. 98193 17766

103, मधुसदन एपार्ट., गीतांजलि -
जैन देरासर की गली, हरिदास नगर,
बोरिवली (वेस्ट) मुंबई-92

गीरीशभाई दोशी
Mo. 7977944600

701, शालीभद्र एपार्टमेन्ट, अरिहंत पार्क,
सुमुलडेरी रोड, सुरत.

पारस शाह

Mo. 81281 45044

बी-404, अयोध्यापुरम् एपार्ट.,
कहान फलिया, कतारगाम, सुरत.